सेन्ट्रल मंथन

• खंड 7 • अंक - 1 • मार्च, 2022

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

राजभाषा सम्मेलन का आयोजन - 31.03.2022

दिनांक 31.03.2022 को केन्द्रीय कार्यालय, मुम्बई द्वारा आयोजित ई-राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर बैंक की हिंदी गृहपत्रिका 'सेंट्रल मंथन' (ऊपर) एवं हिंदी पोस्टर (नीचे) का विमोचन करते हुए श्री एम. वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, साथ में हैं श्री आलोक श्रीवास्तव, कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक, श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक, एवं श्री राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा).

प्रधान संरक्षक
श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक
श्री आलोक श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक
श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक
श्री राजीव पुरी
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक
श्री स्मृति रंजन दाश
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक
श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
सुश्री छाया पुराणिक
सुश्री मधुलिका कांबले
श्री अभय कुलकर्णी

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
• खंड 7 • अंक - 1 • मार्च, 2022

विषय-सूची

▶ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय का संदेश 2
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश 3
▶ माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) महोदय का संदेश 4
▶ संपादकीय 5
▶ कहानी : सपने अंधियारी आंखों के 6
▶ हंगामा धारावाहिकों का 7
▶ बैंको में साइबर सुरक्षा के विविध आयाम 8
▶ सब वापस आता है ! 14
▶ भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष 15
▶ सोशल मीडिया एवं बैंकिंग 21
▶ स्वतंत्र भारत बनाम सेन्ट्रल बैंक - सफरनामा 25
▶ भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष 28
▶ कविता : दिलासा 31
▶ कविता : बचपन / आज फिर से चलेंगे पाठशाला 32
▶ गुड़ पापडी / शाब्बास...../ हमें आप पर गर्व है..... 33
▶ बैंकिंग का नया अवतार : मोबाइल बैंकिंग 34
▶ गणतंत्र दिवस 37
▶ राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 38
▶ कविता : तो जाने 40
▶ राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2022-23 41

प्रत्येक पृष्ठ पर प्रदर्शित भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के विवरण के प्रस्तुतकर्ता श्री रश्मि रंजन, प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मोतीहारी

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादित तथा प्रकाशित : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम हमारे बैंक द्वारा वित्त वर्ष 2021-22 हेतु दर्शाए गए उत्कृष्ट वार्षिक परिणाम हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

हमारा सेंट्रल बैंक आफ इंडिया एक व्यवसायिक बैंक है जिससे सतत व्यवसाय वृद्धि एवं लाभार्जन करना अपेक्षित है. प्रसन्नता का विषय है कि कई वर्षों के बाद हमारे बैंक ने वित्त वर्ष 2021-2022 हेतु बेहतर वार्षिक परिणाम प्रदर्शित किये हैं. हमारे प्रिय बैंक ने पुन: लाभ अर्जित किया है. यह सुखद स्थिति सभी सेन्ट्रलाइट साथियों को और बेहतर कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करने वाली है.

इस प्रौद्योगिकी के युग में "नए बैंकिंग परिवेश" बन रहे हैं. कुछ वर्षों पूर्व बैंकिंग की नवीन सुविधा के रूप में एटीएम ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया और अपनी उपयोगिता के कारण बहुत तेजी से लोकप्रिय भी हो गया. इसी प्रकार नेट बैंकिंग की सुविधा भी आज बहुत लोकप्रिय हो चुकी है. मोबाइल बैंकिंग की सुविधा तेजी से लोकप्रिय होती जा रही है.

नवीनता की ओर आकर्षण मनुष्य का स्वभाव होता है. यदि नयापन उपयोगी हो तो वह बहुत तेजी से लोकप्रिय होता जाता है. हमारे ग्राहक भी नए और उपयोगी बैंकिंग उत्पाद चाहते हैं. नई एवं उपयोगी सुविधाएं चाहते हैं. अपने प्रिय ग्राहकों की अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु हम सदैव तत्पर हैं. हम निरंतर नवोन्मेष उत्पाद एवं सेवाएं प्रस्तुत कर रहे हैं. सेंट्रल बैंक आफ इंडिया "नए बैंकिंग परिवेश" के अनुरूप सम्मानित ग्राहकों को लगातार नई सुविधाएं प्रदान कर रहा है. हमारी नेट बैंकिंग सुविधा को बहुत पसंद किया गया. हमारे बैंक के मोबाइल बैंकिंग एप को हमने यूजर फ्रेंडली बनाते हुए नई सुविधाओं सहित नया कलेवर दिया है. हमारे ग्राहकों को यह पसंद आ रहा है. हमारे सम्मानित ग्राहकों को अपने खाते की शेष राशि जानने के लिये या पासबुक अपडेट करवाने के लिये शाखा में आने की आवश्यकता नहीं है. वे हमारे परिवर्धित तथा यूजर फ्रेंडली एम पासबुक एप के माध्यम से अपने मोबाइल में अपने खाते की स्थिति देख सकते हैं.

आज के ग्राहक नए और उपयोगी तथा सुविधाजनक बैंकिंग उत्पाद चाहते हैं. वे अब और बेहतर सेवा भी चाहते हैं. हमें अपनी शाखा में आने वाले हर व्यक्ति से चाहे वे हमारे ग्राहक हों या न हों अति शिष्टतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए. हमें शाखा में आने वाले हर व्यक्ति के प्रश्न एवं पूछताछ का संतोषजनक उत्तर देना चाहिए. हमें उनसे कनेक्ट होना आवश्यक है. उनकी अपेक्षा समझना आवश्यक है. ध्यान रखें बेहतर लाभ अर्जित करने के लिए बेहतर व्यवसाय आवश्यक होता है तथा बेहतर व्यवसाय के लिये बेहतर ग्राहक सेवा अति आवश्यक होती है.

आपके प्रयासों में सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

माननीय कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

सर्वप्रथम बैंक द्वारा वर्तमान वित्त वर्ष में लाभार्जन किए जाने पर मैं आपको बधाई देता हूं. यह हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय की दूरदर्शिता एवं मार्गदर्शन का सुपरिणाम है कि बैंक अब प्रगति की ओर बढ़ रहा है.

बैंकिंग व्यवसाय में, नवोन्मेष एक निरंतर प्रक्रिया है. अपने ग्राहकों को बेहतर ग्राहक सेवा देने के लिए नवीनतम तथा सुविधाजनक उत्पाद एवं सेवा प्रदान करना बैंकिंग संस्थाओं का प्रयास रहता है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया भी अपनी स्थापना के समय से ही नए बैंकिंग परिवेश प्रदान करने में अग्रणी रहा है. वर्तमान दौर में भी जब बैंकिंग में प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं का दौर चल रहा है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया भी समय के साथ बैंकिंग के नए परिवेश स्थापित कर रहा है.

हमारे मोबाईल बैंकिंग एप के माध्यम से हमारे ग्राहकगण कभी भी कहीं से भी बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं. वे आवर्ती जमा खाता खोल सकते हैं, सावधि जमा रसीद बनवा सकते हैं, फंड ट्रांसफर कर सकते हैं, पीपीएफ जैसी योजनाओं में धनराशि जमा कर सकते हैं, स्टॉप पेमेंट के लिए अनुरोध कर सकते हैं एवं उस अनुरोध को रद्द भी कर सकते हैं. इसी प्रकार, वे मोबाईल बैंकिंग के माध्यम से ऋण लेने के लिए आवेदन भी कर सकते हैं.

इससे पूर्व, कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) के माध्यम से हमारे ग्राहकों के लिए हमारी एक शाखा नहीं अपितु अब पूरा बैंक ही उसकी शाखा बन गई है. एटीएम के माध्यम से ग्राहक कभी भी कहीं भी धन निकासी कर सकता है. हमारे कियोस्क के माध्यम से वह अपने खातों में धनराशि जमा कर सकते हैं. सिक्का विनिमय मशीनों से सिक्के भी प्राप्त कर सकते है. ग्राहकों के लिए स्वंय सेवा पास बुक प्रिंटिंग की सुविधा भी उपलब्ध है और इससे एक कदम आगे बढ़कर हमारे बैंक ने ग्राहकों के लिए सेन्ट एम पासबुक एप की भी सुविधा भी प्रदान की है, जिससे हमारे ग्राहक कहीं भी कभी भी अपना खाता या खाते की प्रविष्टियों को देख सकते हैं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया निरंतर नए बैंकिंग परिवेश स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहता है, जिससे हमारे माननीय ग्राहकों को नवीनतम एवं सुविधाजनक बैंकिंग सेवाएं प्राप्त हों. हमारी शाखाएँ भी अपने ग्राहकों को निरंतर ऐसी सभी सुविधाओं की जानकारी दें जिससे हमारे ग्राहक इनका अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें. उन्हें उत्कृष्ट सेवा दें, बैंक का व्यवसाय बढ़ाएं, लाभ बढ़ाएं.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आलोक श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

सबसे पहले वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय के कुशल नेतृत्व में हमारे बैंक के उत्कृष्ट परिणामों के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूं.

नवोन्मेष सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की परम्परा रही है. हमारा प्रिय बैंक कई बैंकिंग योजनाओं एवं सेवाओं का प्रणेता रहा है. इसी श्रृंखला में नए बैंकिग परिवेश के अनुसार सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया लगातार नए-नए प्रयास कर रहा है. ग्राहको को एटीएम सुविधा, सीबीएस सुविधा के साथ-साथ बड़ी संख्या में व्यवसायिक प्रतिनिधियों (बीसी) की सुविधा भी हमारे बैंक द्वारा प्रदान की गई है.

सेंट मोबाईल एप, सेंट एम पासबुक एप जैसे अत्यन्त उपयोगी यूजर फ्रेंडली मोबाइल एप प्रदान करके सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपने ग्राहकों की मुठ्ठी में ही बैंक उपलब्ध करवा दिया है. इन सुविधाओं के माध्यम से हमारे ग्राहक बिना शाखा में पधारे हुए बैंकिंग के ढेर सारे काम, सप्ताह के हर दिन कभी भी कहीं से भी कर सकते है.

हमारे बैंक से ऋण लेने के लिए इच्छुक व्यक्ति हमारे बैंक के टोल फ्री नम्बर के माध्यम से एक मिस्ड कॉल देकर इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं. हमारा बैंक डोर स्टेप बैंकिंग सुविधा भी प्रदान कर रहा है.

हमें नई सुविधाओं और प्रौद्योगिक को अपनाने के लिए सदैव तैयार रहना ही चाहिए क्योंकि भविष्य की बैंकिग पूरी तरह प्रौद्योगिक आधारित होने जा रही है. अपने ग्राहकों को नियमित रूप से ऐसी सुविधाओं की जानकारी दें एवं उन्हें इन सुविधाओं का उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करें.

अपने ग्राहकों को सदैव सर्वोत्तम सेवा प्रदान करें. व्यवसाय वृद्धि में अपना अधिकतम संभव योगदान दें. व्यवसाय बढ़ेगा तो बैंक का लाभ भी बढ़ेगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

स्मृति रंजन दाश

महाप्रबंधक - राजभाषा

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादकीय

प्रिय साथियों

हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी जी के कुशल नेतृत्व में हमारे बैंक ने वित्त वर्ष 2021-22 के दारौन उत्कृष्ट कार्य निष्पादन प्रदर्शित किया जिसके परिणामस्वरूप बैंक ने कई वर्षो के बाद लाभ अर्जित किया है. तदर्थ आप सभी को हार्दिक बधाई।

जीवन निरंतर गतिशील और परिवर्तनशील है। समय बदलता रहता है। मौसम बदलता रहता है कभी गर्मी कभी सर्दी कभी बरसात का मौसम होता है, कभी दिन छोटे और रात बडी होती है,कभी इसके विपरीत रात बडी और दिन छोटे होते हैं, इसी तरह कभी अमावस्या की अंधेरी काली रात होती है कभी पूर्णिमा की चमकती चांदनी रात होती हैं।

मानव जीवन भी इसी तरह से होता है जीवन में कभी सुख होता है कभी दुख होता है कभी मानव मन को सब अच्छा लगता हैं, कभी कभी मन को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। बदलते समय और बदलती परिस्थिति के साथ मनुष्य की प्रतिक्रिया भी बदलती है। वह सुख को तो सहजता से लेता है लेकिन दुख में असहज हो जाता है।

जीवन तो खटटे-मीठे अनुभवों से मिलकर ही पूर्ण होता है. मानव होने की सबसे बडी विशेषता यही है कि उसकी संवेदनाओं को परस्पर बांटा जा सकता है। संवेदना की विलक्षण प्रवृत्ति भी अदभुत है। सुख बांटों तो बढता है जबकि दुख बांटों तो घटता है परस्पर सुख दुख बांटना ही तो अपनापन होता है और अपनत्व का भाव ही मानव जीवन का आधार है। सुख आए तो भी बांटो, दुख आए तो भी बांटों। परस्पर मिलकर सुख दुख की अनुभूति कीजिये। जीना इसी का नाम है।

राजीव वार्ष्णेय

सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

कहानी : सपने अंधियारी आंखों के

- अशोक अगरोही
665, पॉकेट डी, दिलशाद गार्डन,
दिल्ली 110095

हम बैंक में काम करते समय कभी सोच भी नहीं पाते कि अपनी छोटी सी संवेदनशीलता से हम किसी के जीवन में कितना क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। हमारी छोटी सी सहायता किसी का पूरा जीवन बदल सकती है। प्रस्तुत कहानी मेरे बैंकिंग करियर के शुरूआती दिनों की एक सच्ची कहानी है। इस घटना से मैंने सीखा कि महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आपकी शक्तियां कितनी हैं बल्कि महत्वपूर्ण ये है कि आप अपनी सीमित शक्तियों से भी किसी की सहायता कितनी कर पाते हैं।

गुजरात में 12 साल बैंक की सेवा करके मैं अपने नेटिव दिल्ली आया था। दिल्ली में शाहदरा के रेलवे स्टेशन पर बैठा मैं अपनी कुछ पुरानी यादों को ताज़ा कर रहा था, कि पास ही के बैंच पर बैठे, आँखों पर काला चश्मा लगाये एक सज्जन ने मुझसे मुखातिब होकर पूछा-'आवाज़ से लगता है आप अगरोही साहब हैं! मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि इतने सालों बाद भी कोई ऐसा है, जो मुझे पहचानता है। हाँ, 'मैं अशोक अगरोही हूँ।' वे बोले- 'लगता है आपने मुझे नहीं पहचाना है! मैं किसनू हूँ जिसे आप कृष्ण कन्हैया कहते थे। आप तो मेरी मदद करके मुझे भूल गये मगर मैं आपको कैसे भूल सकता हूँ ? आपकी थोड़ी सी मदद और ढेर सारे अपनेपन ने मेरी तो ज़िंदगी ही बदल कर रख दी है। आज मेरे पास भगवान का दिया सब कुछ है। ग़ाजियाबाद में एक अच्छी सी मेरी अपनी दुकान है।

उसने जेब से निकाल कर अपना विज़िटिंग कार्ड मुझे दे दिया। जैसे ही उसने अपनी आँखों से काला चश्मा उतारा, मैंने उसे पहचान लिया। वह दिव्यांग दृष्टिहीन किशन चंद ही था। उसकी आँखे कृतज्ञता से नम थीं। इससे पहले कि मै उससे कुछ और बातें कर पाता, सामने प्लेटफॉर्म पर मेरी गाड़ी आ गई थी। मैं भी जल्दी में अपना विज़िटिंग कार्ड उसको देकर अपनी गाडी की तरफ लपका। गाड़ी में बैठते ही किशन चंद से वाबस्ता यादें चलचित्र की तरह आँखों के सामने आने लगीं।

बात लगभग 20 साल पुरानी है। मैंने बैंक में अपना करियर शुरू ही किया था। मेरी पोस्टिंग शाहदरा शाखा में थी। वहीं पर दिव्यांग किशन चंद से मेरी मुलाक़ात हुई थी। गाड़ी में किसी ने उसकी जेब काट ली थी। कुछ रूपयों के अलावा उसमें रखी उसकी बैंक पासबुक भी चली गई थी। उसे एकाउण्ट नम्बर भी याद नही था। आँखों से लाचार किशन चंद चाहता था कि कोई उसका एकाउण्ट नम्बर ढूँढ कर उसके 2800 रूपये उसे दिलवा दे। वह कई लोगों के सामने गिड़गिड़ाया, मगर सब अपने कामों में व्यस्त थे। उसकी हालत देख कर मुझे उस पर दया आ गई। मैं अपनी सीट से उठकर उसके पास गया और उसे दिलासा दिया कि, मैं उसके पैसे उसे जरूर दिलवाऊँ गा, मगर साथ ही उसे अपनी मजबूरी भी बता दी कि, मैं भी बैंक में नया हूँ और यहाँ के सिस्टम से अभी परिचित नहीं हूँ। अत: इस काम में मुझे भी कुछ समय लग सकता है। उसे मेरी बात पर यकीन आ गया।

उस समय तक बैंकों में कम्प्यूटरों का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था अत: बिना किसी ठोस जानकारी के मेरे लिये भी उसका एकाउण्ट ढूँढना आसान न था। मगर कई दिन तक मैं इसी प्रयास में लगा रहा। आखिर, एक पुराने साथी की मदद से मैं उसका खाता ढूँढने में सफल हो गया। मैने उसका पुराना खाता बंद करवा कर नया खाता खुलवा दिया। नये खाते की पासबुक लेते समय उसके हाथ काँप रहे थे; होंठ नि:शब्द हो गये थे। उसकी आँखों से गंगा जमुना बह निकली थी। वह मेरे पैरों पर गिर गया। मैंने भी उसे सीने से लगा लिया। मेरा भी दिल भर आया था।

नये खाते से जैसे उसे नया जीवन मिल गया था। वह अक्सर बैंक में आने लगा, कभी कुछ जमा कराने तो कभी कुछ निकालने। पहले वह रेलगाड़ी में फेरी लगाकर नमकीन बेचता था, बाद में वह कई बड़ी चीजें बेचने लगा। जब भी वह बैंक में आता मुझसे जरूर मिलता था। उस आदमी में काम का जितना उत्साह था, उससे कहीं अधिक उसमें जिजीविषा थी। एक दिन उसने बताया कि, उसने टीवी खरीद लिया है। मैंने पूछा-'तुम्हें तो दिखाई नहीं देता है, तुम टीवी का क्या करोगे?' मैं नहीं मौहल्ले के दूसरे लोग तो देखेंगे, इसी बहाने घर में रौनक आ जाएगी। मैं भी सुनकर तो संगीत का आनंद ले ही सकता हूँ'- उसका जवाब सुनकर मैं ठगा सा रह गया था। मैंने उससे कहा-'तुम किसनू नहीं बल्कि, कृष्ण कन्हैया हो। तुम जीने का रहस्य जानते हो। जमकर काम करो तुम्हें सफलता जरूर मिलेगी। एक दिन तुम्हारी अपनी बहुत बड़ी दुकान होगी।' मेरी कही इस बात को उसने आत्मसात कर लिया। इसी तरह दो साल बीत गये।

एक दिन वह बैंक में आया तो बहुत खुश दिखाई दे रहा था। उसने नये कपड़े पहन रखे थे। वह मुझे खिलाने के लिए मिठाई साथ लाया था। बोला- बाबूजी, मैंने शादी कर ली है। 'उसकी दी मिठाई खाकर मेरी आँखों में खुशी के आँसू छलक आये। मैं बोला-'किसनू, तुम तो सच में कृष्ण कन्हैया निकले।' उसने मेरे हाथ अपने हाथों में ले लिया। उसका गला रूंध गया। वो बोला-'बाबूजी, ये तो ऊपरवाले की मेहरबानी और आप जैसे लोगो की दुआओं का फल है, वरना मुझ जैसे दृष्टिहीन को कौन अपना जीवन साथी बनाने वाला था? सच मानिये आपने जब से बैंक में मेरा नया खाता खुलवाया, उस दिन से मेरा तो जीवन ही बदल गया। ईश्वर की दया से उस दिन से पैसे की कभी कमी नहीं रही। धंधा भी खूब चल निकला। यह ठीक है कि मैं रात दिन मेहनत कर रहा हूँ, मगर जीने का आनंद आ रहा है। मेरी अंधी आँखों ने जो सपने देखे थे, धीरे-धीरे वे सब सच हो रहे हैं। बाबूजी मेरी दुल्हन मेरी तरह नहीं है, उसे सब दिखाई देता है। तभी तो उसने तुम जैसे हीरे से शादी की है'- मेरे मुँह से अचानक निकल गया। मेरे साथ वह भी ठहाका लगाकर हँस पड़ा था।

अचानक झटके के साथ रेल रूक गई। मैं किशन चंद की यादों से वर्तमान में लौट आया था। मैं सोच रहा था कि, कभी कभी इन्सान का छोटा सा काम भी कितना बड़ा हो जाता है।

जिंदगी मुश्किल इसलिए है क्योंकि लोग आसानी से मिली चीज की कीमत नहीं जानते हैं.

हंगामा धारावाहिकों का .....

आज़ादी का अमृत महोत्सव

- सुश्री मधुलिका अ. कांबले
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
एसपीबीटी महाविद्यालय, केका, मुंबई.

सदियों से, 'हम लोग' जिन टी वी धारावाहिकों के सहारे अपना 'मनोरंजन' करते आ रहे है .. आज हम एक बार फिर उसी धारावाहिकों के दुनिया की 'सफर' करते है. आज के वर्तमान में 'अपराधी कौन' है? उसका 'खानदान' या उसके 'अड़ोस-पड़ोस' वाले. जो 'रजनी' की तरह अपने आपको दुनिया के 'दर्पण' में झांककर देखते हैं. 'जिंदगी' के इस 'सफरनामा' जैसे 'यात्रा' में कितने ही तरह के 'मिस्टर या मिसेस' रहते हैं जो 'तितलियां' बनकर 'बनते-बिगड़ते' रहते हैं लेकिन इन्हें 'देखो मगर प्यार से' वरना ये हमें ही 'बाबाजी का बाईस्कोप' दिखा देंगे जों 'नटखट नारद' की तरह 'बसंती' रंग में 'एक कहानी' बन जाएगा.

'वाह जनाब' आपने तो हमारी 'तृष्णा' को 'तेरा पन्ने' की तरह 'नुक्कड़' की गलियों में फेंक दिया. अगर 'बॅरिस्टर विनोद' को हम बता देंगे तो वे कहेंगे कि 'कहां गए वो लोग' जो 'दादा-दादी की कहानी' सुनाया करते थे. फिर वे तो हमें 'बिक्रम और बेताल' बनाकर झाड़ पर उलटा लटका देंगे. अब इस जमाने में इन 'अजूबां' जैसे मुश्किलों को सामने रखकर उनसे 'रिश्ते-नाते' या 'लेना-देना' जैसी 'छोटी-बड़ी बातें' तो 'छपते-छपतें' ही हमें देखने को मिल सकती है. चलो, अब हम इस छोटे-बड़े 'कथासागर' को 'सत्यजित रे प्रेजेंटस्' द्वारा प्रस्तुत करते है. लेकिन इतने से 'एक-दो-तीन-चार' के डिब्बे में 'खजाना' कैसे समाएगा? क्या इसकी 'बुनियाद' 'पंखो से पंखो तक' फैली होगी? जीवन की 'कच्ची धूप' में पककर केवल 'राग-दरबारी' बनने से ही काम नही चलेगा. उसी 'आसमां कैसे-कैसे' प्रकार के 'पंचतंत्र' को अगर हम 'खरीं-खरीं' सुना दें तो हमें 'पुलिस-फाईल' से निकलकर 'घर-जमाई' बनकर 'श्रीकांत' को साथ में रखते हुए उसे 'राज से स्वराज तक' ले जाना पड़ेगा.

'खेल-खेल में' वैसे तो आपने 'रवींद्रनाथ टैगोर की कहानियां' सुनी ही होगी तब उनकी 'पूर्णिमा' को 'यात्रा' न समझकर 'तस्वीर का दूसरा रूख' ही समझें. जैसे 'अप्पू और पप्पू', 'कभी दूर कभी पास' रहते हैं वैसे ही इनकी 'पुरवाई' को 'नकाब' मत पहनाईये वरना 'करमचंद' को इस 'जिंदगी-जिंदगी' में 'सुबह' लाने के लिए 'स्वयंसिध्दा' बनना पड़ेगा. वैसे तो नारी के मन में जो 'रामायण' सदियों से 'कश्मकश' की तरह हिलौरें पैदा कर रही है. वैसे ही 'सारा जहां हमारा' नारी के लिए इस प्रकार की सोच रखता है कि जिसमें 'सौ बात की एक बात' यह भी होती है कि नारी स्वयं अपने 'रक्षक' की 'खोज' करें और 'छोटे बाबू' को साथ में रखकर 'रथचक्र' में बैठकर 'सिंहासन बत्तीसी' के जाल में न फंसते हुए 'अमृता' बनकर 'काला जल' पीती रहें और चेहरें पर 'आश्चर्य-दीपक' के भाव लाती रहें. जब कि 'कबीर' जैसे संत-महात्मा को भी 'अदालत', 'चुनौती' देने से नहीं घबराती है तो नारी के 'प्रथम प्रतिश्रुति' को 'हम हिंदुस्तानी' कैसे भूल सकते है?

अब तो हम भी जान गये है कि 'बहादुर शाह जफर की नई दिशाएं' और 'मालगुड़ी डेज' भी 'मनोरंजन' के लिए मशहूर हो चुकी है. वैसे भी उनके 'लोककथा' की 'और भी है राहें' अनेक है जो 'इसी बहाने' 'आकाशगंगा' की 'कसौटी' को 'शक्ति' प्रदान करती है. आज की 'स्त्री' को 'अपने-पराए' लोगों के बीच से गुजरकर 'होनी-अनहोनी' घटनाओं का 'अधिकार' मांगना पड़ता है जिसका 'पुरस्कार' उसे 'मुंशी प्रेमचंद की कहानियां' द्वारा मिलता है. तब उसे लगता है कि क्या सचमुच 'ऐसा भी होता है'? सदियों से 'इंतजार' करते-करते वह 'उड़ान' भरना चाहती है जो ऐतिहासिक 'अमीर-खुसरो' के 'आधा सच आधा झूठ' को देखकर 'हक्के-बक्के' रहती है. इन सभी तानो-बानों से बुनी हुई 'महाभारत' को वह 'कड़वा सच' मानकर 'निर्मला' बनना चाहती है और 'फास्टर फेने' के सहारे जीवन से लड़ना चाहती है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बैंकों में साइबर सुरक्षा के विविध आयाम

- सुश्री डिम्पल
वरिष्ठ प्रबंधक
मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय

आजकल जब हम सब वर्क फ्रॉम होम कर रहे हैं. हमारे बैंकिंग से जुड़े सारे काम भी ऑनलाइन हो रहे हैं. ऐसे में साइबर सुरक्षा को लेकर भारतीय रिजर्व बैंक किसी भी तरह की कोताही बर्दास्त नहीं कर रही है. इसलिए तो उसने एक बड़े सरकारी बैंक पर साइबर सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करने के लिए जुर्माना लगाया है. आज के युग को अगर साइबर-युग कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी.

क्या आपको भी कोरोना जांच के नाम फोन कॉल आ रहे हैं? लॉटरी में लाखों रुपए जीतने के फोन आ रहे हैं? क्रेडिट कार्ड पर लोन के लिए ऑफर आ रहे हैं? अगर हां तो सावधान हो जाइए, इसी तरह के तमाम फोन कॉल से लोगों से फाइनेंसियल ठगी की जा रही है.

पूरे देश में जिस तेजी से साइबर अपराध के मामले बढ़ रहे हैं, उसी तेजी से अब बैंक से जुड़े हुए फाइनेंशियल फ्रॉड के मामलों की संख्या में बढ़ोतरी हुई हैं. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के आंकड़ों के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2019 और 2020 के दौरान बैंकों और वित्तीय संस्थानों में धोखाधड़ी के मामलों में 28 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है. बढ़ते हुए साइबर अपराध में सबसे ज्यादा मामले आर्थिक गतिविधियों से जुड़े हुए होते हैं, इससे सबसे ज्यादा बैंकिंग सेक्टर प्रभावित हो रहा है. बैंकिंग नियामक रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक सालाना 28 फीसदी की दर से धोखाधड़ी के मामले बढ़े हैं. साल 2021 में डिजिटल लेनदेन में 4 गुना बढ़ोतरी देखी जा रही है. डिजिटल लेन-देन एक तरफ तो ग्राहकों के लिए लाभदायक है, साथ ही उनके लिए खतरा भी है. साइबर जालसाज वर्तमान में डिजिटल लेनदेन करने वाले लोगों को ही सबसे ज्यादा अपना शिकार बना रहे हैं.

एक दशक पहले से ही भारत ने भी डिजिटल दुनिया में अपने कदम को मजबूती से जमाना शुरू कर दिया था, अब तो सरकार पारदर्शिता लाने के लिए डिजिटल पेमेंट सिस्टम को बढ़ावा दे रही है. बैंकों की लाइनें कम हो गई है और मोबाइल ही बैंक बन चुका है. चंद सेकंड में लाखों करोड़ों रुपए की लेन-देन आसानी से हो जाती है. हालांकि जिन्हें इसकी समझ कम है, वे ठगी के शिकार भी हो रहे हैं. देश और दुनिया के कोने-कोने में ऐसे गिरोह सक्रिय हैं. साइबर फ्रॉड में आर्थिक ठगी के साथ-साथ ब्लैकमेलिंग जैसे अपराध भी शामिल हैं. पुलिस के पास आए दिन ऑनलाइन ठगी की कई शिकायतें आती रहती हैं.

'डिजिटल बन रहा भारत आओ मिलकर करे इसका स्वागत'

डिजिटलाइजेशन सीधे-सीधे शब्दों में वक्त की मांग है, यह भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी एक मुहिम है, ताकि भारत में लोगों को टेक्नोलॉजी और डिजिटल दुनिया का ज्ञान दिया जा सके. आज भारत, डिजिटल दुनिया से बहुत दूर है, क्योंकि ज्यादातर लोग ऑनलाइन दुनिया से अभी भी अनजान है, इसलिए यह मुहिम शुरू की गयी है.

''इंटरनेट से जुड़ रहे हैं, विकसित भारत के सपने बुन रहे हैं''

डिजिटल इंडिया मुहिम का लक्ष्य खासकर सभी सरकारी सुविधाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनसामान्य के लिए उपलब्ध कराना और सभी सरकारी सुविधाओं को इंटरनेट से जोड़ना है. इससे ना सिर्फ हर भारतीय का डिजिटल लेन-देन का ज्ञान बढ़ेगा, बल्कि साथ ही भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना भी साकार होगा. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 1 जुलाई, 2015 को डिजिटल इंडिया पहल की शुरुआत की थी. सरकार द्वारा इस प्रोजेक्ट को साल 2019 तक पूरे भारत में डिजिटल सुविधाएँ प्रदान करने की योजना थी. काफी हद तक सरकार अपने उद्देश्य में सफल हुई है, पर दिल्ली अभी दूर है. डिजिटल इंडिया के मुहिम से कागज़ों में लिखा-पढ़ी होने वाला समय भी बचेगा और कार्यालयों में लोगों की लंबी कतारों में कमी आएगी.

डिजिटलाइजेशन का सबसे प्रमुख उद्देश्य है; डिजिटल व्यवस्था को सुरक्षित बनाना. इससे लोग ऑनलाइन सभी सेवाओं का उपयोग कर सकेंगे, जिससे देश में उनकी पूंजी और सुरक्षित रहेगी. साथ ही डिजिटल इंडिया मुहिम के अनुसार भारत में छोटे गाँव से शहरों तक सभी जगह हाई स्पीड इंटरनेट की सुविधा दी जायेगी, जिसकी मदद से लोग ऑनलाइन सुविधाओं का उपयोग करना सीखेंगे और उसे जीवन का एक हिस्सा बना लेंगे. सरकार की सभी सेवाएं भी ऑनलाइन होने से लोगों को ज्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा और भ्रष्टाचार नहीं हो पायेगा. इस से डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहन मिलेगा.

'अब लंबी लाईनों में खड़े होकर समय नहीं गवाना,
डिजीटल इंडिया ने है सबका जीवन सँवारा'

'कॅशलेस भारत की है यह शुरूआत
सब मिलकर दो डिजिटलाइजेशन का साथ'

इससे वित्तीय लेन देन में आसानी होती हैं. डिजिटल पेमेंट सिस्टम की सबसे अच्छी बात है, कि हमें कैश ढोने, प्लास्टिक कार्ड, बैंक या एटीएम की लाइन में लगने की जरूरत नहीं है. खासतौर पर जब हम सफर में हों तो खर्च करने का यह सेफ और इजी विकल्प है.

ट्रांसेंड कंसल्टिंग के डायरेक्टर कार्तिक झवेरी ने कहा, 'अगर आप कम आमदनी वाले लोगों को छोड़ दें, तो बाकी सबके लिए डिजिटलाइजेशन के काफी फायदे हैं. कम आमदनी वाले लोगों को और कम पढ़े लिखे लोगों को इसके इस्तेमाल में हालांकि दिक्कत हो सकती है.'

डिमोनेटाइजेशन के बाद देश कैशलेस सिस्टम की तरफ बढ़ रहा है. शुरुआती परेशानी ने इस राह में हालांकि कई चिंताएं पैदा कर दी हैं. लोग यह सोचने लगे हैं, कि क्या ऑनलाइन ट्रांजेक्शन उन्हें सुविधा देगा या उनकी परेशानी और बढ़ा देगा? क्या इससे कुछ फायदे होंगे या एक्स्ट्रा चार्ज चुकाना पड़ेगा? कैशलेस इकनॉमी बनाने में लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए सरकार ने डिजिटल ट्रांजेक्शन पर कई फायदों की घोषणा की है. इस पर सवाल यह उठता है कि क्या ये इन सुविधाओं के साथ काफी हैं और क्या करेंसी नोट सिस्टम में आने के बाद इसमें आइडेंटिटी चोरी होने की घटनाएं बढ़ तो नहीं जाएंगी? बहुत सारे लोग मोबाइल फोन में अपने पासवर्ड सेव रखते हैं. फोन लिस्ट में ही पिन भी सेव कर लेते हैं. इस तरह की गलती डिजिटलाइजेशन के नुकसान की तरफ ले जाती हैं.

साइबर स्पेस एक ऐसा क्षेत्र है जहां बिना किसी खून-खराबे के किसी भी देश की सरकार को आंतकित किया जा सकता है. साइबर स्पेस के जरिए आतंक फैलाने वाले कम्प्यूटर से महत्वपूर्ण जानकारियां निकाल सकते हैं तथा इसका इस्तेमाल धमकी देने व सेवाओं को बाधित करने में कर सकते हैं. साइबर आतंकवादी नई संचार तकनीक के औजारों और तौर-तरीकों का इस्तेमाल करके नेटवर्क को तहस-नहस कर सकते हैं. हैकिग के साथ ही कम्प्यूटरों को बड़े पैमाने पर वायरस से संक्रमित कर सकते हैं, ऑनलाइन सेवाओं को बाधित कर सकते है. यही नहीं वे सरकारों के महत्वपूर्ण ई-मेल पर भी दखल दे सकते हैं.

आजकल ऑनलाइन अपराध बहुत हो रहे है. यह कई तरह से होते है, इसमें कई बार हमारे बैंक में जमा पैसे भी गायब हो जाते हैं.

यूनिसिस सिक्योरिटी इंडेक्स 2020 की रिपोर्ट के मुताबिक, आजकल बैंक कार्ड फ्रॉड के मामले सबसे ज्यादा आ रहे हैं. कार्ड डिटेल चोरी के मामले और ऑनलाइन शॉपिंग फ्रॉड के मामले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं.

जैसे-जैसे हम डिजिटल इंडिया की तरफ आगे बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे ही ऑनलाइन फाइनेंशियल फ्रॉड के केस भी तेजी से बढ़ रहे हैं. इस वक्त फाइनेंशियल ठगी में काफी बढ़ोतरी हुई है और कई लोग इस ठगी का शिकार हुए हैं.

भारतीय स्टेट बैंक की बैंक एम्पलाई यूनियन के अध्यक्ष पवन कुमार के मुताबिक, वर्तमान में बैंकों के सामने साइबर के बढ़ते मामले एक बड़ी चुनौती हैं. बैंक इन चुनौतियों से जूझ रहा है और खुद को मजबूत करने में जुटा हुआ है.

फ्रॉड की घटनाओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है. ठग लोगों की कमजोरियों और असावधान का फायदा उठा कर उन्हें लाखों, करोड़ों की चपत लगा रहे हैं. जालसाज नित नए-नए हथकंडों के जरिए ठगी की कोशिश कर रहे हैं. कभी रिवॉर्ड, कभी अच्छा प्रीमियम, कभी कैशबैक आदि का लालच जालसाज लोग, ग्राहकों को देते हैं. फोन कॉल, एसएमएस, ईमेल जैसी टेक्नोलॉजी की मदद से साइबर ठगी को अंजाम दिया जा रहा है. 'कॉल स्पूफिंग' की भी मदद ली जा रही है. जालसाज ऐप के जरिए कॉल को स्पूफ करते हैं और ग्राहकों को वह नंबर शो होता है, जिसे जालसाज दिखाना चाहते हैं. ग्राहकों को लगता है कि बैंक या किसी कंपनी के आधिकारिक कस्टमर केयर नंबर से कॉल या मैसेज आया है, इसलिए वे प्रतिक्रिया देते हैं और फिर जालसाजों के झांसे में आ जाते हैं. अगर ग्राहक थोड़ी सी सावधानी बरतें तो फ्रॉड से बचा जा सकता है.

आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, 'पिछले साल के मुकाबले इस साल बैंकों में धोखाधड़ी के मामलों में 15 फीसदी

की बढ़ोतरी हुई है और धोखाधड़ी की राशि में 73.8 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई है. आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2018-19 में बैंकों में 71,542.93 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई. यह 2017-18 में 41,167.04 करोड़ रुपये थी.'

डिजिटलाइजेशन रूपी इस बदलाव के कई फायदे भी हैं और नुकसान भी. बढ़ रहे फ्रॉड के मामले एक बहुत बड़ा नुकसान है जो हम सब झेल रहे हैं.

लोकल सर्किल्स सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक, 'देश में हाल ही में हुए एक सर्वे से ये बात निकलकर आई है कि अधिकांश मामलों में हम खुद ही अपने साथ होने वाले फ्रॉड को न्योता देते हैं. सोर्स लोकल सर्किल्स सर्वे की एक रिपोर्ट के मुताबिक 29% लोग एटीएम पिन परिवार को बताते हैं, वहीं, 4% लोग एटीएम पिन स्टाफ को बताते हैं, 33% लोग बैंक अकाउंट, डेबिट/क्रेडिट कार्ड डिटेल, पिन पासवर्ड फोन में रखते हैं, 11% लोग एटीएम पिन, कार्ड नंबर, पासवर्ड मोबाइल कॉन्टैक्ट लिस्ट में रखते हैं.

हाल में कुछ रिपोर्ट आई हैं, जिसमें पता चला है कि, फ्रॉड करने वाले ओटीपी सिक्योरिटी में भी सेंध लगा रहे हैं. बैंकिंग सेवाएं जितनी तेजी से डिजिटल हो रही हैं, उतनी ही तेजी से धोखेबाज अपना जाल फैलाते जा रहे हैं. बैंक जितनी तेजी से अपने सिस्टम को चाक-चौबंद बना रहे हैं, उससे दोगुनी तेजी ये साइबर अपराधी सुरक्षा में सेंध लगा रहे हैं. अभी तक बैंक ग्राहकों के खाते में रखे धन की सुरक्षा के लिए डिजिटल ट्रांजेक्शन में टू-फैक्टर-ऑथेंटिकेशन और ओटीपी एसएमएस वैरिफिकेशन को सबसे सुरक्षित जरिया मानते रहे हैं. बैंक के किसी भी प्रकार के लेनदेन और फंड ट्रांसफर के लिए ओटीपी जरूरी हैं. लेकिन फ्रॉड करने वालों ने इसे भी धता बताना शुरू कर दिया है. अक्सर देखा गया है कि हमारे ट्रांजेक्शन के बाद कभी-कभी तो तुरंत ओटीपी या मैसेज आ जाता है, वहीं अक्सर काफी समय बाद भी ओटीपी नहीं आता. हम सोचते हैं कि नेटवर्क समस्या होगी, लेकिन यह ओटीपी फ्रॉड की वजह से भी हो सकता है.

फ्रॉड होने के लिए कौन जिम्मेदार : बैंक अकाउंट के अलावा डेबिट और क्रेडिट कार्ड की सुरक्षा ग्राहक की बड़ी जिम्मेदारी है. लेकिन उतनी ही जिम्मेदारी बैंक की भी है. गलत ट्रांजैक्शन से संबंधित शिकायत के लिए आरबीआई ने गाइडलाइंस जारी की हुई है. इसके अनुसार यदि बैंक की ओर से किसी तरह की तकनीकी, लापरवाही या ग्राहक की निजी जानकारी लीक होती है, तो इसके लिए ग्राहक को जिम्मेदार नहीं माना जाएगा. अगर थर्ड पार्टी के तहत अकाउंट होल्डर के साथ फ्रॉड होता है, तो न तो बैंक और न ही खाताधारक को जिम्मेदार माना जाएगा. यहां पर थर्ड पार्टी का मतलब वेबसाइट, ऑनलाइन वॉलेट के जरिए पेमेंट आदि हैं. अगर ऑनलाइन पेमेंट दो बार हो गया, तो ग्राहक को 3 दिन के भीतर बैंक को सूचित करना चाहिए.

अगर बैंक के मानकों पर ध्यान दिया जाए तो बैंक और थर्ड पार्टी की जिम्मेदारी तय है. लेकिन अगर बैंक ग्राहक अपनी गलती से फ्रॉड का शिकार होता है, या किसी अन्य बात से नुकसान उठाता है, तो बैंक जिम्मेदार नहीं होता है. ऐसे मामले में होने वाले नुकसान को ग्राहक को खुद ही उठाना पड़ता है. ऐसे में हमेशा बैंक अकाउंट से संबंधित पर्सनल डाटा कभी भी किसी को न बताएं. हालांकि अगर बैंक अकाउंट में किसी भी तरह का फ्रॉड दिख रहा है, तो इस फ्रॉड की शिकायत बैंक से करें.

- साइबर अपराध से कैसे बचें:

फ्रॉड से बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि बैंकों और आरबीआई के चेतावनी का पूरा ध्यान रखें. कभी भी अपनी निजी जानकारियां किसी के साथ साझा न करें. बैंक और आरबीआई इस तरह की सूचना अक्सर एसएमएस या मेल पर देता रहता है. देश में साफ-साफ नियम है कि बैंककर्मी आपसे आपके पासवर्ड या ओटीपी कभी भी नहीं मांग सकते, ऐसे में अगर आपसे कोई ऐसी जानकारी मांग रहा है, तो समझ जाएं कि वह कोई फ्रॉड है. इसके अलावा ऑनलाइन ट्रांजैक्शन के समय, रिटेल आउट लेट या पेट्रोल पंप पर अपने कार्ड का इस्तेमाल करते समय भी सतर्क रहें. ऑनलाइन खरीदारी, बैंकिंग वेबसाइट का उपयोग हमेशा अपने लैपटॉप या मोबाइल से सही करें. ऐसे काम साइबर कैफे या फ्री के वाई-फाई से करने से बचें. यहां पर आपकी निजी जानकारियां चोरी हो सकती हैं, जिनका आपको बाद में नुकसान हो सकता है. इन कदमों से आप फ्रॉड से सुरक्षित रह सकते हैं.

सुरक्षा का सबसे अच्छा तरीका है कि, अपने पासवर्ड को हमेशा बदलते रहें, लेकिन पासवर्ड कभी ऐसे न बनाएं जिसका लोग अंदाजा लगा सकें. पासवर्ड हमेशा ट्रिकी रखें. इसमें सभी तरह के अक्षर और स्पेशल करेक्टर को शामिल करें. इसके अलावा अपने बैंक अकाउंट को मोबाइल फोन से जोड़ कर भी रखें. वहीं अपने बैंक अकाउंट में एसएमएस अलर्ट सर्विस भी एक्टिव रखें. ऐसा होने से जैसे ही आपके बैंक अकाउंट में कोई ट्रांजेक्शन होगा, आपको तुरंत पता चल जाएगा. अगर यह ट्रांजेक्शन गलत है तो आप इसे रोकने की पहल भी कर सकते हैं.

इस तरह के फ्रॉड से बचने के लिए फोन पर पासवर्ड सेव न करें. मेल पर भी पासवर्ड सेव करने से बचें. फोन लिस्ट में कार्ड पिन कतई सेव न करें. अपने डेबिट कार्ड का पिन किसी को न बताएं. इस तरह की धोखाधड़ी करने वाले कोरोना जांच के फर्जी कॉल भी

करते हैं. इस तरह के कॉल फर्जी कस्टमर केयर से आते हैं. कैश बैक और फ्री रिचार्ज के नाम पर ये कॉल आते हैं. इस तरह के फर्जीवाड़े से बचने के लिए कभी अनजान लिंक पर क्लिक न करे.

समय-समय पर अपने पिन को बदलते रहें. पिन को डालते समय एटीएम या पीओएस कीपैड को कवर कर लें. अपने पिन को याद कर लें. अपने एटीएम कार्ड या किसी भी दूसरी जगह इसे लिखने से बचें. अपनी जन्मतिथि या सालगिराह की तारीख को पिन के तौर पर कभी भी इस्तेमाल न करें. अपने अकाउंट के साथ मोबाइल नंबर को रजिस्टर या अपडेट जरूर करें जिससे आपको अपने अकाउंट से डेबिट कार्ड और दूसरे ट्रांजैक्शन के बारे में जानकारी मिलती रहे. किसी भी व्यक्ति के साथ अपने ओटीपी, डेबिट कार्ड पिन या डिटेल को कभी भी शेयर नहीं करें. कभी भी किसी ऐसे कॉल, एसएमएस या ईमेल का जवाब नहीं दें, जिसमें आपको अपनी एटीएम पिन या किसी दूसरी गोपनीय जानकारी को साझा करने के लिए बताया जाए. एटीएम के कमरे में एक समय पर एक व्यक्ति से ज्यादा मौजूद होने की इजाजत नहीं है. अपने पीठ पीछे किसी भी व्यक्ति के द्वारा अपने पिन को चोरी किए जाने से बचाएं. इसके अलावा बैंक ने कहा है कि हमेशा एटीएम से पैसों की विरड्रॉअल करते समय योना कैश का इस्तेमाल करें. इससे आपको पैसे निकालते समय डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ती. बैंक के मुताबिक यह सुरक्षित है. कार्ड खोने या चोरी होने पर उसे तत्काल संबंधित बैंक की मदद लेकर ब्लॉक करा दें. होटल/दुकानों/मॉल या कहीं भी कार्ड का इस्तेमाल हमेशा आपके सामने करने को कहें. कभी-कभी अकाउंट से कैश डेबिट हो जाता है, लेकिन मशीन से बाहर नहीं आता, ऐसा होने पर तुरंत बैंक में फोन कर शिकायत करें और अपनी ट्रांजेक्शन की रसीद संभालकर रखें. कभी भी किसी अंजान आदमी की एटीएम से कैश निकालने के लिए मदद न लें.

फर्जी मेल और एसएमएस से सावधान रहें. ऑफर के चक्कर में डिटेल शेयर न करें. सीवीवी, ओटीपी, कभी न बताएं, एटीएम पिन साझा न करें इत्यादि. फोन कॉल, एसएमएस या अन्य किसी माध्यम से ओटीपी, यूपीआई पिन या एटीएम पिन किसी के साथ शेयर न करें. केवाइसी के लिए एसएमएस पर ध्यान न दें. एसएमएस में दिए गए मोबाइल नंबर पर काल न करें. एटीएम कार्ड के पीछे सफेद पट्टी पर अपना नाम जरूर लिखें ताकि कार्ड बदलने पर तत्काल पहचान हो सके. फोन, ईमेल, एसएमएस, वॉट्सऐप के माध्यम से नौकरी, पॉलिसी बोनस, लॉटरी, सस्ता लोन आदि के ऑफर पर भरोसा न करें. बताए गए किसी भी पेटीएम वॉलेट या खाते में रुपये ट्रांसफर न करें. किसी कंपनी या बैंक का नंबर गूगल पर सर्च न करें. इंटरनेट पर मिले नंबर जालसाजों द्वारा डाले गए भी हो सकते हैं और आप ठगी का शिकार हो सकते हैं.

सोशल मीडिया पर अनजान रिक्वेस्ट तुरंत स्वीकार न करें, पूरा इंफो चेक करके ही फ्रेंड बने तथा संदेह होने पर तुरंत ब्लॉक करें. अपना सारा पर्सनल डाटा सोशल मीडिया पर शेयर करना खतरनाक साबित हो सकता हैं. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर पर पोस्ट डालकर कंपनी या बैंक का नंबर न मांगें.

फर्जी कस्टमर केयर से सावधान रहें. ऑफिशियल वेबसाइट से ही नंबर लें. कोई पर्सनल जानकारी न दें. लास्ट ट्रांजैक्शन की डिटेल न दें. नंबर को ऑनलाइन चेक करें. ठगी से बचने का सबसे बेस्ट तरीका है कि फोन पर किसी को भी अपने बैंक खाते या कार्ड की डिटेल न दें. बैंक आए दिन यह सूचना ग्राहकों को देते रहते हैं कि बैंक अधिकारी ग्राहकों से कभी भी फोन, मैसेज, ईमेल या किसी लिंक के जरिए उनकी बैंकिंग डिटेल्स नहीं मांगते हैं. इसलिए ग्राहकों को कॉल पर किसी को भी बैंकिंग डिटेल्स देने से बचना चाहिए. कुछ मामलों में यह भी देखा गया कि जालसाज बैंककर्मी या कंपनी का अधिकारी बनकर कॉल करता है और समस्या के समाधान के लिए एक लिंक भेजता है. लिंक पर क्लिक करने पर फॉर्म खुलता है और उसमें कुछ डिटेल्स भरने को कहा जाता है. अगर आपने उसमें डिटेल भरकर भेज दीं तो आपका अकाउंट खाली हो जाता है. इसलिए फोन पर आए हर किसी लिंक पर क्लिक न करें और न ही कोई फॉर्म भरें, खासकर तब जब लिंक किसी अनजान नंबर से आया हो.

आजकल हर बैंक/कंपनी का सोशल मीडिया हैंडल है. आप वहां पर डायरेक्ट मैसेज के जरिए शिकायत कर सकते हैं. आधिकारिक ईमेल आईडी पर भी शिकायत की जा सकती है. अगर आपने किसी बैंक/कंपनी में कोई शिकायत की है और उसके बाद फोन कॉल पर आपकी समस्या हल करने के लिए कोई खाते या कार्ड से जुड़ी डिटेल मांगे तो न दें. अगर आप इंटरनेट या टेक्नोलॉजी के साथ बहुत ज्यादा फ्रेंडली नहीं हैं तो सीधे बैंक या कंपनी में जाकर अपनी समस्या बताना बेहतर रहेगा. पेटीएम, गूगल पे, फोनपे जैसे पेमेंट ऐप्स पर हेल्प सेक्शन रहता है. आप संबंधित पेमेंट ऐप्स पर हो रही परेशानी या ट्रांजेक्शन से जुड़ी कोई शिकायत के लिए उसे एक्सेस कर सकते हैं.

इसके अलावा किसी अटैचमेंट या फाइल को डाउनलोड करते समय सतर्क रहें. किसी भी निजी जानकारी को देने से पहले एक बार ई-मेल भेजने वाले की आईडी को ध्यान से देखें. इसके अलावा अपनी निजी या वित्तीय जानकारी जैसे क्रेडिट कार्ड की डिटेल आदि को ई-मेल के जरिए किसी के साथ साझा न करें.

आप एंटीवायरस, एंटीस्पाईवेयर और फायरवॉल सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करें. अपने वेब ब्राउजर को हमेशा अपडेट करें और फिशिंग फिल्टर को इनेबल करें. इसके साथ ही ऐसे किसी ई-मेल या सोशल मीडिया मैसेज पर कभी क्लिक न करें जिसकी आपको उम्मीद या जरूरत न हो. जिस ई-मेल पर आपको संदेह है, उसे मत खोलिए. इसके साथ ऐसे ई-मेल की प्रमाणिकता की जांच करने के लिए कंपनी को फोन करें. अलग-अलग चीजों जैसे खरीदारी, निजी काम आदि के लिए अलग ई-मेल अकाउंट का इस्तेमाल करें. कुछ अटैचमेंट खासकर ZIP फाइल को कभी न खोलें और run.exe फाइल से भी बचें. अपने निजी काम के लिए बैंक के कॉरपोरेट ई-मेल एड्रेस का इस्तेमाल नहीं करें. किसी भी स्पैम ई-मेल को न खोलें. सोशल मीडिया वेबसाइट्स पर कभी भी संदेह वाली इमेज और वीडियो को न खोलें. बैंक की डिटेल मांगने वाले फोन कॉल का जबाव न दें. फर्जी फोन कॉल से सावधान रहना जरूरी है. आपके अकाउंट को कन्फर्म करने वाले किसी मैसेज का कभी भी जवाब न दें.

इनके अलावा बैंक समय समय पर अपने ग्राहकों को सलाह देता है :

किसी अजनबी को ऐप स्टोर / प्ले स्टोर के माध्यम से मोबाइल ऐप इंस्टॉल करने या आपको अपने मोबाइल की सेटिंग बदलने का निर्देश के लिए मार्गदर्शन करने की अनुमति न दे. किसी कंपनी / बैंक से तथाकथित प्रतिनिधि के अनुरोध पर प्राप्त किसी भी अवांछित एसएमएस को अग्रेषित न करे. गूगल सर्च के माध्यम से प्राप्त विभिन्न व्यापारियों / संस्थाओं / बैंकों आदि की ग्राहक सेवा नंबर पर भरोसा न करें, क्योंकि वे नकली हो सकते है. संदिग्ध पाए गए मेल को आगे प्रेषित न करें/जवाब ना दे. मेल पर व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी (यूजर नेम, पासवर्ड, क्रेडिट/डेबिट कार्ड आदि) को साझा ना करे. अनचाहे ईमेल, जो तत्काल कार्रवाई की मांग करते हैं, ऐसे मेलों पर एहतियात बरतें एवं सावधान रहे. वेबसाइट के यूआरएल पर ध्यान दें. साइट भी वैध साइट की तरह ही दिखती है लेकिन इसके यूआरएल की वर्तनी में भिन्नता होती है. जैसे 'I' की के स्थान पर '1' के द्वारा पहचाना जा सकता है. मेल में संलग्न किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले हमेशा दो बार सोचें.

लिंक के असली गंतव्य को पहचानने हेतु अपने माउस पॉइंटर को लिंक पर ले जाएं, जिससे ब्राउज़र के निचले बाएं कोने पर सही लिंक प्रदर्शित होगा. पॉप-अप को बिना देखे उस पर क्लिक ना करें. जो सॉफ्टवेयर बैंक द्वारा अनुमोदित नहीं है, उस सॉफ्टवेयर को डाउनलोड न करें. बैंक से संबंधित किसी भी डेटा को इंटरनेट पर अपलोड ना करें. अपनी इंटरनेट एकाउंट और पासवर्ड के लिए यूजर खुद जिम्मेदार होगा. यूजर यह सुनिश्चित करें कि वे मेल में या किसी अन्य वेबसाइट में दिए गए लिंक पर क्लिक कर वेबसाइट का एक्सेस नहीं करते हैं. वेब ब्राउज़र के पुराने संस्करण सुरक्षित नहीं हैं अत: उन्हें अद्यतन किया जाना चाहिए. पॉप अप को गलत गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है अत: पॉप अप को ब्लॉक करने की सलाह दी जाती है. वाई-फाई नेटवर्क को शुरू करने के लिए ऑटो-कनेक्ट विकल्प को एनेबल ना करें. ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के उपयोग ना होने पर इसे ओपन की स्थिति में ना रखें. पहले से मौजूद एडमिनिस्टेटर पासवर्ड एवं यूजर नेम को बदलें. कार्यालय से घर जाते समय डेस्कटॉप को बंद करें. सुनिश्चित करें कि आपका डेस्कटॉप एंटी वायरस से अपडेटेड है. संलग्न फाइल ओपन करने से पहले स्कैन करें. अनधिकृत सॉफ्टवेयर को इंस्टाल न करें. स्वच्छ डेस्क तथा साफ स्क्रीन पॉलिसी का अनुसरण करें. अपने सी ड्राइव में फोल्डरों को साझा न करें. सुनिश्चित करें कि गोपनीय दस्तावेजों को खुले में ना रखा हों. एक वैकल्पिक ई-मेल पता बनाए. प्रत्येक ऑनलाइन खाते के लिए अपना मूल ई-मेल पते का उपयोग करने के बजाए सार्वजनिक रूप से खातों एवं उपयोगकर्ताओं के लिए वैकल्पिक ई-मेल पता बनाएं. एडमिन राइट न दें - जब भी कोई नया सॉफ्टवेयर या एप सिस्टम अडमिन राइट की मांग करे तो उसके एसेस की जांच करें, इसके कारणों की जांच दस्तावेज़ों से करें और यदि संभव हो तो सहायक टीम से संपर्क करें

अपने ब्राउज़र्स को नियमित अंतराल पर अद्यतन करें. अपने इंटरनेट ब्राउज़र एवं इससे संबंधित प्लगइन के नवीनतम वर्जन का उपयोग सुनिश्चित करे. अपने सिस्टम को सुरक्षित रखें. एंटीवायरस, फायरवाल, एड-ब्लॉकर सोल्युशन का पैच नियमित आधार पर सावधानीपूर्वक अद्यतन करना सुनिश्चित करें. दो फैक्टर प्रमाणीकरण - अपने मोबाइल फोन और/या ई-मेल पते को अपने खाते के साथ जोडें ताकि जब आप साइन-इन करें तो आपकी पहचान का सत्यापन हो सकें.

अगर आपको लगता है कि कोई कंपनी आपको पांच मिनट में 50000 रुपए तक का लोन दे रही है, वो भी बिना आपकी इनकम देखे..तो 100 बार सोचें. देश मे ऐसे सैकड़ों ऐप सक्रिय हैं, जो मिनटों में आपको लोन दे देंगे. पुलिस ने ऐसे 200 ऐप्स को ब्लॉक करने को कहा है.

ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचने के लिए किसी भी असुरक्षित वाईफाई नेटवर्क का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. किसी भी ईएमआई को कम करने के लालच देने वाले फोन कॉल से बचे. किसी भी लिंक पर क्लिक न करें. बिना किसी वजह के किसी भी क्यूआर कोड को स्कैन करने से बचें. ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचने के लिए अपने पासवर्ड का सुरक्षित और गोपनीय रूप से इस्तेमाल करें.

अपने नेट बैंकिंग का पासवर्ड, ओटीपी, पिन, कार्ड वेरीफिकेशन कोड और यूपीआई पिन को किसी के साथ साझा न करें. किसी फिशिंग ईमेल पर क्लिक न करें और ऑनलाइन भुगतान में हमेशा वन टाइम पासवर्ड का विकल्प ही चुने. फ्रॉड करने वाले अक्सर नए तरीके खोजते हैं. जालसाज कोविड -19 उपचार के लिए पैसे दान करने के वास्ते बैंक डिटेल शेयर करने के लिए कह सकते हैं. यहां तक कि वे आपको व्हाट्सएप, ईमेल और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिकार बनाने की कोशिश करते हैं. बैंक ने कहा कि ऐसे हालात में सही और गलत को पहचानना मुश्किल हो गया है.

केंद्रीय गृह मंत्रालय के मुताबिक अगर कोई व्यक्ति साइबर फ्रॉड का शिकार होता है तो वह 155260 पर कॉल कर अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है. मंत्रालय ने लोगों के आर्थिक नुकसान को रोकने के लिए यह कदम उठाया है. शिकायत रजिस्टर होने के बाद जल्द ही कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी. हेल्पलाइन को एक अप्रैल, 2021 को सॉफ्ट लॉन्च किया गया था. हेल्पलाइन नंबर 155260 और इसके रिपोर्टिंग प्लेटफॉर्म को गृह मंत्रालय के तहत भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र द्वारा चालू किया गया है. अपने सॉफ्ट लॉन्च के बाद से दो महीने के कम समय में ही इस हेल्पलाइन नंबर पर दर्ज किए गए शिकायतों के आधार पर 1.85 करोड़ रुपये से अधिक की धोखाधड़ी करने वाले सक्रिय साइबर ठगों के बड़े गिरोहों का पर्दाफाश हुआ है.

राष्ट्रीय स्तर पर साइबर सुरक्षा खतरों का मुकाबला करने और उन्हें कम करने के लिये एक एकीकृत प्रतिक्रिया को लागू करने में प्रभावी समन्वय, उत्तरदायित्वों का अधिव्यापन और स्पष्ट संस्थागत सीमाओं व जवाबदेही की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है. भारत में हार्डवेयर के साथ-साथ सॉफ्टवेयर साइबर सुरक्षा उपकरणों व तकनीकों के मामले में स्वदेशी क्षमता (आत्मनिर्भरता) का अभाव है.

पिछले दो दशकों में भारत ने साइबर सुरक्षा की अनुकूलता पर ध्यान केंद्रित करते हुए संस्थागत मशीनरी तैयार करने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है, साथ ही इस पहल का विस्तार कई सरकारी संस्थाओं तक है. प्रधानमंत्री कार्यालय के अंतर्गत ही कई साइबर पोर्टफोलियो शामिल हैं. राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद भी इनमें से एक है, इसकी अध्यक्षता आमतौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार द्वारा की जाती है, और यह भारत की साइबर नीति पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. NSA द्वारा राष्ट्रीय सूचना बोर्ड की अध्यक्षता भी की जाती है, जो साइबर सुरक्षा नीति पर अंतर-मंत्रालयी समन्वय के लिये सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करता है. राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन के अंतर्गत जनवरी 2014 में स्थापित राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र को महत्त्वपूर्ण सूचना बुनियादी ढाँचे के संरक्षण का कार्य सौंपा गया है. वर्ष 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वयक कार्यालय की स्थापना की गई, जो प्रधानमंत्री को रणनीतिक साइबर सुरक्षा मुद्दों पर सलाह देता है.

साइबर सुरक्षा और डिजिटल संचार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये सॉफ्टवेयर के विकास हेतु अवसरों को बढ़ाने की आवश्यकता है. भारत सरकार अपने मेक इन इंडिया कार्यक्रम में साइबरसिटी अवसंरचना को शामिल करने पर विचार कर सकती है. साथ ही वर्तमान में स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये एक अद्वितीय भारतीय पैटर्न पर उपयुक्त हार्डवेयर विकसित किये जाने की आवश्यकता है.

राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013 ने स्पष्ट किया कि भारत को एक राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति की आवश्यकता है, हालाँकि इसे अभी तक जारी नहीं किया गया है. अत: साइबरस्पेस के महत्त्व को देखते हुए नई रणनीति में सभी प्रमुख मुद्दों को शामिल किया जाना चाहिये हैं:

- साइबर संघर्षों पर सिद्धांत
- वैश्विक बेंचमार्क स्थापित करना
- बहु-हितधारक दृष्टिकोण:
- सीमाओं का निर्धारण:
- स्वदेशीकरण को बढ़ावा देना

भारत में साइबर लॉ: सूचना प्रौधोगिकी अधिनियम Information Technology Act, 2000' के सेक्शन 65, 66, 66बी, 66सी, 66डी, 66इ, 66एफ, 67, 67ए, 67बी, 67सी, 68, 69, 70 और सेक्शन 71 तक अलग अलग क्राइम के लिए ₹ 20,000 से ₹ 1,000,000 तक का जुर्माना और तीन से पांच साल तक कैद का प्रावधान हैं.

डिजिटल होती दुनिया में साइबर अपराध एक गंभीर समस्या है. हैकरों द्वारा प्राय: उन्ही कंप्यूटर नेटवर्कों में सेंध लगाई जाती है, जिनका सुरक्षा-नेटवर्क कमज़ोर होता है. अत: तकनीक को उन्नत करते हुए तकनीकी रूप से सुदृढ़ नेटवर्क का निर्माण करना हमारी प्राथमिकता अवश्य होनी चाहिये, लेकिन उन्नत होती तकनीक से हैकर भी स्वयं को उन्नत करते जाते हैं और साइबर अपराध, पूर्णत: बंद हो जाएं यह शायद ही संभव हो पाए. ऐसे में साइबर सुरक्षा का आर्थिक पक्ष भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना की इसका तकनीकी पक्ष.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सब वापस आता है !

- डॉ. मनीष कुमार सोनी
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा

किराए के आटो में बैठे बैठे सूरज की तीखी रोशनी में आंखें मिचमिचा सी गई थी. सड़क पर दूर तक सन्नाटा पसरा था. पूरा इलाका ही गर्मी में निर्जन बना हुआ था. फिर भी कोई उम्मीद उसे टकटकी लगाकर देखने पर मजबूर कर रही थी. एकाएक उसे ख्याल आया पता नहीं सरिता कैसा महसूस कर रही होगी. बहुत साथ दिया है उसने, अभी भी बेचारी निभाती जा रही है बिना कोई मांग किए. क्या दे पाया अभी तक उसे मैं कुछ भी तो नहीं. जब ख्याल आने लगते है तो सावन की बारिश की तरह लगातार आते रहते है. एकाएक बाप की कही एक बात टीस सी भरती है मन में... आलोक बेटा सब वापस आता है. तुम जो करते हो, चाहे अनजाने में भी हो. वह सब भी एक दिन वापस आता है. अच्छा बुरा सब वापस आना ही है.

यह दुनियां एक दीवाल की तरह है और तुम्हारे आचार विचार सब एक गेंद की तरह है जो दीवार से जैसे टकराता है, वैसे ही वापस आता है, उतने ही रफ्तार में, सम्भल कर जीना सीख लें, अच्छे काम करेगा तो अच्छा वापस आएगा. मैंने कहां सुनी थी वो बात ध्यान से. उन्हें छोड़कर अकेले चला आया था शहर. बुढाती हुई देह में कहां जान रह जाती है. जब उन्हें छोड़कर आ रहा था तो कोई भी गम नहीं हुआ था. अब अपने पिता की बेचारगी की याद उसे दर्द में डुबा रही थी. छलक आई आंखें, अपने कर्मों के पछतावे ने उसे थोड़ा हताश कर दिया. तभी दूर से एक सवारी आती दिखने लगी. मोड़ पर पहुंच कर सवारी ने इशारा किया. आलोक ने भी ऑटों स्टार्ट कर उसके पास पहुंचने की जल्दबाजी दिखाई. बैठते ही सवारी ने इशारा किया हनुमान नगर. आलोक ऑटो को घुमाकर चल पड़ा. कितनी सही बात बोली थी दादा ने सब वापस आता है. सामने के सीसे से खुद को देखा,कुछ साल पहले तक जवान दिखाई देता था, अब बालों में सफेदी फैल गई थी. पहले थोड़ी घृणा सी हुई फिर खुद से ध्यान हटा कर सवारी को देखा, लगा जैसे खुद का ही बेटा बैठा हो. एक टीस उसे फिर यादों में बहाने की कोशिश करने लगी. सीसे से ध्यान हटाकर उसने मन को शांत किया. गले को खंखार कर बलगम सड़क पर थूक दिया. जैसे बेटे को घर से दुत्कारकर निकालने का सुख जैसा मिला. याद आया तीन बरस हो गये उसे गए एक बार भी मोहन ने फोन भी नहीं किया. साला ठीक ही हुआ मेरे साथ, फिर पुराने दिन आंखों के सामने आये. जब वह अपने बापू को छोड़कर शहर आ रहा था. बच्चे जैसे रुआंसी हो गई थी आंखे, जैसे गिड़गिड़ा रही हो. आते जाते रहना बेटा, ताकीद कर रही हो जैसे एक बार भी पलट कर नहीं देखा मैंने.

“बस यहीं रोक दो चाचा !” सवारी की आवाज कानों में गूंजी. ब्रेक मारते-मारते थोड़ा आगे निकल आया था. सवारी ने मीटर देखा और छुट्टे पैसे दे कर चला गया. बिना कुछ बोले पैसे जेब में रखते हुए उसने खुद को आइने में देखा, खुद को धिक्कारते हुए हल्की सी मुस्कुराहट तैरी ओठो पर उसे अपनी हालत पर सुकून सा मिल रहा था. मेरे साथ ऐसा ही होना था. सब सही हो रहा है. मैंने अपने बापू को बुढ़ापे में सुख नही दिया तो मुझे उस सुख का क्या अधिकार. बापू ! माफ करना! मेरे साथ सही हो रहा है. बापू तुम सही थे - सब वापस आता है.

यदि आप केवल मुस्कुराएंगे तो आप पाएंगे कि जीवन अभी भी मूल्यवान है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष

- श्री रोहित तिवारी
सहायक प्रबंधक
कॉर्पोरेट वित्त शाखा, बीकेसी

आजादी की 75 वीं वर्षगाठं वर्ष 2021 में पूर्ण हो गयी है. इस वर्ष को विशेष बनाने के लिए पूरे देश में इसे आजादी का अमृत महोत्सव के रुप में मनाया जा रहा हैं. 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ तब से लेकर इस पावन घड़ी को हर साल स्वतत्रतां दिवस के रुप में तो मनाया जाता है, साथ ही हर 25 वें साल विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है. आज हर भारतीय के मन में उत्सव है क्योंकि हम ''आजादी का अमृत महोत्सव'' मना रहे हैं. इस आजादी के लिए हमने बहुत बड़ी कीमत चुकाई है. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. उसे समाज में स्वतंत्रता पूर्वक जीने का अधिकार है. संसार में सभी प्राणी स्वतंत्र रहना चाहते हैं. यहाँ तक कि पिंजरे में बंद पक्षी भी स्वतंत्रता के लिए निरंतर अपने पंख फड़फड़ाता रहता है. उसे सोने का पिंजरा, सोने की कटोरी में रखा स्वादिष्ट भोजन भी अच्छा नहीं लगता. वह भी स्वतत्रं होकर मुक्त गगन में स्वच्छंद उड़ना चाहता है. मनुष्य को भी स्वतंत्रता प्रिय है. वह भी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करता हुआ प्राणों की बाजी लगा देता है.

महाकवि तुलसीदास जी का कहना है ''पराधिन सपने हुँ सुख नाहीं'' - इस उक्ति का अर्थ यह है कि पराधीन व्यक्ति कभी भी सुख को अनुभव नहीं कर सकता है. सुख पराधीन और परावलंबी लोगों के लिए नहीं बना है. पराधीन एक तरह का अभिशाप होता है. महान स्वतंत्रता सेनानी - बाल गंगाधर तिलक जी ने कहा था ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है.''

भारत ने ली अंगडाई थी,
जब आजादी की ठानी थी।
आजादी को हुए सिर्फ साल पचहत्तर
पर ये सभ्यता बहुत पुरानी थी।

75 वर्षों में देश को जोड़ने वाले विचार और आदर्श

मूलत: ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की अवधारणा की संकल्पना भारत वर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा की गई थी. जिसका उद्देश्य था - पृथ्वी पर मानवता का विकास. इसके माध्यम से उन्होंने यह संदेश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं और सभी का कर्तव्य है कि वे परस्पर एक-दूसरे के विकास में सहायक बनें. जिससे मानवता फलती-फूलती रहे, यद्यपि यह एक प्राचीन अवधारणा है, किन्तु आज यह पहले से भी अधिक प्रासंगिक है. हम सभी जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की सबसे प्रथम कड़ी होता है - परिवार, परिवार लोगों के एक ऐसे समूह का नाम है, जो विभिन्न रिश्ते-नातों के कारण भावनात्मक रूप से एक दूसरे से जुड़े रहते हैं. ऐसा नहीं है कि उनमें कभी लड़ाई - झगड़ा नहीं होता या वैचारिक मतभेद नहीं होते. परंतु इस सबके बावजूद वे एक - दूसरे के दु:ख - सुख के साथी होते हैं. इसी अपनेपन की प्रबल भावना होने के कारण परिवार सभी लोगों की पहली प्राथमिकता होता है. एक परिवार के सदस्य एक-दूसरे को पीछे धकेलकर नहीं वरन एक - दूसरे का सहारा बनते हुए आगे बढ़ते है. परिवार के इसी रूप को जब वैश्विक स्तर पर निर्मित किया जाए, तो वह "वसुधैव कुटुम्बकम" कहलाता है.

राष्ट्रीय सुरक्षा

देश की आजादी प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं होता हमें उसकी स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए सतत् जागरूकता की आवश्यकता होती है. देश की स्वतंत्रता और अखण्डता को कायम रखने के लिए हमें अपने साधनों से सुरक्षा व्यवस्था को गठित करना पड़ता है, ताकि हम किसी संकट का सामना करने के लिए सदैव प्रस्तुत रहे जो देश अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ नहीं होते, उनकी आजादी अधिक दिन तक नहीं टिक सकती अत: हर राजतंत्र देश के लिए अपनी सुरक्षा व्यवस्था को भली - भाँति कायम रखना अनिवार्य है भारतीय उप महाद्वीप के विभाजन के बाद भारत स्वतंत्र हुआ, प्रारंभ से ही पड़ोसी राष्ट्र भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार करता रहा है.

भारत को 1962 में चीन के हमले तथा 1965 और 1971 में पाकिस्तानी हमलों का मुकाबला करना पड़ा है हमारी अच्छी सुरक्षा व्यवस्था के कारण ही हम अपने देश को बचा पाये है. एक अवधारणा के अनुसार किसी राष्ट्र के निर्माण में ये चार अनिवार्यत: शामिल होते है. भूमि, जनसंख्या, संप्रभुता और सरकार, राष्ट्र की अखंडता को बनाए रखने अर्थात देश की सीमाओं की रक्षा के लिए राष्ट्र का एक अनिवार्य अंग है. भारत की सेना देश का गौरव और हमारा विश्वास है. भारतीय सैनिकों ने अपने शौर्य और बलिदान से विश्व में ख्याति अर्जित की. पिछले 75 वर्षों में देश सुरक्षा के क्षेत्र में नित नवीन अवलंब स्थापित कर रहे हैं जिससे देश की एकता और अखंडता के सुदृढ रखने में देश सफल हुआ है.

भारत विविध संस्कृतियों और परंपराओं वाला देश है देश में विभिन्न धर्मों, जातियों और पंथों से संबंधित लोग रहते हैं. हमारे देश की सुंदरता यह है कि विविधता में एकता है. विभिन्न मूल के लोग हमारे देश में शांति और सद्भाव में रहते हैं. स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष एकता का सबसे अच्छा उदाहरण है आज़ादी के 75 वे वर्ष में भी देश एकजुट है.

हमारा देश समृद्ध परंपरा और संस्कृति वाला देश है, साथ रहना और एक दूसरे की मदद करना हमारी संस्कृति का हिस्सा है हमारी संयुक्त परिवार प्रणाली हमारे द्वारा एकजुट रहने के लिए दिए जाने वाले महत्व का सबसे बड़ा उदाहरण है. संयुक्त परिवार प्रणाली हमारे देश में सदियों से चली आ रही थी. आधुनिक समय के विपरीत, अतीत में परिवार न केवल एक साथ रहते थे बल्कि अच्छी तरह से बंधे भी थे लोग एक साथ बैठते थे. बातें करते थे और एक दूसरे के साथ अपना भोजन करते थे. एकजुट रहने से उन्हें कई तरह से मदद मिली. इनमें से एक वित्त का प्रबंधन कर रहा था. परिवार के पुरुष सदस्य काम करने के लिए बाहर गए और परिवार के वित्त का प्रबंधन किया.

सभी खर्चा को बहन करने का पूरा भार अकेले एक व्यक्ति पर नहीं आया इस तरह से बुजुर्ग लोगों को यह महसूस नहीं हुआ कि ये आज अकेले हैं, बच्चों को भी अच्छी कंपनी मिली जिससे उनकी वृद्धि और विकास में मदद मिली. बच्चों को अपने दादा-दादी से अच्छे संस्कार मिले क्योंकि ये पूरे दिन उनके साथ रहते थे. हमारे देश में लोग न केवल अपने तत्काल परिवार के सदस्यों के साथ एकजुट रहते थे बल्कि अपने पड़ोसियों और विस्तारित परिवार के साथ भी अच्छी तरह से बंधे थे लोग एक दूसरे के साथ खड़े रहे और एक दूसरे के लिए एक महान समर्थन प्रणाली के रूप में काम किया.

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय नारी की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव :

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय नारी की स्थिति में क्रांतीकारी बदलाव आया, वह घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के बहुआयामी विकास में अतुल्य योगदान देने लगी. आज हमारे देश की नारियां राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और शैक्षिक सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है. सदियों से शोषित एवं पददलित नारी पुरुष प्रधान समाज के प्रभाव से मुक्त होकर आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक दासता से निकलकर स्वच्छंद जीवन का विकास करने की सुविधाएं प्राप्त कर रही है.

राजनीतिक क्षेत्र:

ब्रिटिश शासन काल में भारतीय नारियों की राजनीतिक स्थिति ठीक नहीं थी. 1920 पूर्व उसे मत देने का अधिकार नहीं था और न ही वह किसी पद के लिए उम्मीदवार हो सकती थी. भारतीय नारियों को सक्रिय राजनीतिक के आंगन में लाने का श्रेय विश्व बंधु बापु को जाता है, जिन्होंने नारियों को अहिंसा युक्त आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया.

- **सामाजिक एवं पारिवारिक क्षेत्र:**

  स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारियों में सामाजिक जागृति की एक नई लहर उत्पन्न हुई, वे नारिया जो कभी घर की चारदीवारी में कैद रहती थी अब अनेक महिला संगठनों व समितियों की सदस्य बनकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने लगी है. शिक्षित नारियों ने पर्दे का परित्याग कर दिया सामाजिक क्षेत्र में आए इस बदलाव से रूढ़िवादिता, कर्मकाष्ठों और अनुष्ठानों का महत्व घट गया.

- **आर्थिक क्षेत्र :**

स्वतंत्र भारत में नारी की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई. उसे आर्थिक रूप से पुरुषों पर पहले की तरह आश्रित नहीं रहना पड़ता है. आज सभी क्षेत्रों में काम काजी नारियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है. कुछ विभागों में तो पुरुषों की अपेक्षा नारियों की संख्या अधिक है. नारियों ने अपने परिवार और समाज में आदर व सम्मान प्राप्त करने हेतु धनोपार्जन को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है. दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई महंगाई ने परिवार पर यह दबाव डाला है कि आर्थिक गाड़ी को खींचने के लिए पुरुषों के साथ-साथ नारियाँ धनोपार्जन हेतु कार्य करें.

- **शिक्षा के क्षेत्र में :**

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में नारियों ने शिक्षा में काफी उन्नति की है शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होने पर नारियों में चेतना जागृती हुई है. आज भारतीय नारी राजनीतिक, विज्ञान, व्यवसाय, साहित्य और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है. कई स्त्रियाँ मानसिक रूप से पुरुषों से प्रतियोगिता करके अपने प्रतिभा का परिचय दे रही है. पेइचिंग महिला सम्मेलन में शिक्षा को बुनियादी मानवाधिकार घोषित किया गया था.

- **विविध सेवाओं के क्षेत्र :**

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय नारियाँ विविध सेवाओं के क्षेत्र में आगे आयी है. नारियाँ पुरुषों के समान सभी पदों में सुशोभित है. स्वतंत्रता उपरांत बनने वाली मंत्री मण्डल में राजकुमारी अमृत कौर स्वास्थ्य विभाग की मंत्री बनी. श्रीमती सरोजनी नायडु संयुक्त प्रांत की गवर्नर पद पर सुशोभित हुई. इसके अतिरिक्त जो भी योग्यतम महिला जिसे पद के योग्य समझा गया उसे उस पद पर नियुक्त किया गया.

- स्वतंत्र भारत में नारी की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास :-
- वैधानिक प्रयास
- आर्थिक स्थिति सुधारने का सरकारी प्रायास
- अन्य महत्वपूर्ण प्रयास :

1. सन 1958 में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने प्रौढ़ स्त्रियों के लिए पौढ़ शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया.
2. ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए गावों में महिला मण्डलों की स्थापना की गई है.
3. नगरों में कार्यरत कामकाजी नारियों को आवासीय सुविधा देने के लिए महिला हास्टल खोला गया है. इस समय हमारे देश में 88 प्रतिशत महिला हास्टल है.

भारत के गाँव

भारत को गाँवों का देश कहा जाता है. यहाँ की लगभग दो तिहाई जनसंख्या गाँवों में रहती है, की आजीविका का आधार कृषि और उससे जुड़े उद्योग धंधे हैं, इन्हीं गाँवों में हमारे देश की आत्मा बसती है तभी तो कहा गया है - "है अपना हिन्दुस्तान कहाँ, वह बसा है हमारे गाँव में."

- **आज़ादी से पहले गाँवों की स्थिति** - आजादी से पहले गाँवों की स्थिति दयनीय हालत में थी. गांवों का भाग्य जमींदारों के हाथ में था. ये जमींदार किसानों, मजदूर तथा अन्य कर्मियों पर मनमाना टैक्स लगाते थे, वर्षा न होने पर पैदावार न होने की दशा में ये लगान वसूलना नहीं भूलते थे. ऐसे में किसान की हालत दयनीय थी. झोपड़ियों या कच्चे घरों में रहना, वहीं पास में पेड़ों से बँधे जानवर, कच्ची गलियाँ, गलियों में बहता परों का गंदा पानी, वर्षा ऋतु में घुटनों तक भरा कीचड़, चारों ओर फैली गंदगी, कमजोर शरीर वाले अनपढ़ नर-नारी और ऐसा था गाँवों का स्वरूप जहाँ विकास के कदम नहीं पहुंचे थे. अस्पताल, बैंक, स्कूल सब कुछ गांववालों की पहुंच से दूर हुआ करते थे.

- **गाँवों की वर्तमान स्थिति** - आजकल गाँवों की स्थिति में पर्याप्त बदलाव आ गया है, स्वतंत्रता के उपरांत ग्रामीण विकास की योजनाएं बनने और उनका क्रियान्वयन होने से विकास की बयार गांवों तक जा पहुँची है. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना कार्यक्रम की शुरुआत होने से अधिकांश गाँवों को सड़कों से जोड़ा गया है. ग्रामीण विद्युतीकरण से बिजली गाँवों तक पहुंच गई है. इससे टेलीविजन, वाशिंग मशीन, फ्रिज जैसे आधुनिक उपकरण गांव वालों के घरों तक जा पहुँचे, सिंचाई की व्यवस्था हेतु राजकीय नलकूप लगवाए गए इससे कृषि की वर्षा पर निर्भरता खत्म हुई. इससे किसानों की आय में वृद्धि हुई. अब वहाँ भी पक्की नालियां और खड्जे दिखाई देते हैं, कंधे पर

हल रखकर खेत को जाते हुए, किसानों की जगह अब ट्रैक्टर दिखाई देते हैं. घर के बाहर जहाँ जहाँ हल-बल दिखाई देते थे, अब यहाँ ट्रैक्टर और कृषि के अन्य उन्नत मंत्र दिखाई देते हैं.

युवा नजर में, "युवा भारत"

भारत की युवा शक्ति 'आँखों में वैभव के सपने, मन में तूफानों सी गति हो' ऐसे ही हृदय में उठते हुए ज्वार, परिवर्तन की ललक, अदम्य साहस, स्पष्ट संकल्प लेने की चाहत का नाम है युवावस्था. दुनिया का कोई भी आन्दोलन, दुनिया की कोई भी विचारधारा युवाशक्ति के बिना सशक्त नहीं बन सकते. वास्तव में वह युवा शक्ति ही है जिसके दम पर किसी निर्माण या विध्वंस की नींव रखी जाती है. विश्व में भारत सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश है. सन 2020 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी, जबकि चीन की 37, अमेरिका की 45 और यूरोप और जापान की औसत आयु 48 वर्ष होगी. जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार भारत में 60 करोड़ 13 से 35 वर्ष की आयु के युवा है. इन आंकड़ो से स्पष्ट है कि भारत में कामकाजी व्यक्तियों कि संख्या सबसे अधिक है. विशाल भारत के समग्र समावेशी विकास के लिए कामकाजी व्यक्तियों की विशाल जनसंख्या की आवश्यकता होगी. अत: भारत को एक युवा राष्ट्र कहा जा सकता है. प्रश्न यह है कि कोई राष्ट्र अपनी युवा पूँजी का निवेश कैसे करता है, क्या वह विशाल युवा जनसंख्या को राष्ट्र पर बोझ मानकर उसे राष्ट्र की कमजोरी के रूप में निरूपित करता है अथवा सशक्त, समृद्ध, शक्तिशाली और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उसका समुचित उपयोग करने के साधन उपलब्ध कराता है अपितु इस रिपोर्ट में भी भारत की संभावनाओं को लेकर विश्वास व्यक्त किया गया है! वास्तव में जिस तरह से आज पूरा देश अपनी 'युवा शक्ति' को लेकर आशान्वित है, जिस तरह से लोग युवा कंधों पर भारत को एक वैश्विक महाशक्ति बनने की तरफ अग्रसर होते देखने की कामनाएं कर रहे हैं, मुझे लगता है की हमें 'सपनों की बुनियाद' को समझने का प्रयास करना होगा. हमें आज के युवा भारत की वास्तविकता को समझने का प्रयास करना होगा.

स्वतंत्र भारत में पर्यावरण नीतियाँ तथा कानून

भारत में पर्यावरण संरक्षण का इतिहास बहुत पुराना है. हडप्पा संस्कृति पर्यावरण से ओत-प्रोत थी, तो वैदिक संस्कृति पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्याय बनी रही. भारतीय मनुष्यों ने समूची प्रकृति ही क्या, सभी प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना. ऊर्जा के स्रोत सूर्य को देवता माना तथा उसको सूर्य देवो भव: कहकर पुकारा, भारतीय संस्कृति में जल को भी देवता माना गया है. सरिताओं को जीवन दायिनी कहा गया है, इसीलिए प्राचीन संस्कृतियां सरिताओं के किनारे उपजी और पनपी, भारतीय संस्कृति में केला, पीपल, तुलसी, बरगद, आम आदि पेड पौधों की पूजा की जाती रही है. मध्य कालीन एवं मुगलकालीन भारत में भी पर्यावरण प्रेम बना रहा. अंग्रेजों ने भारत में अपने आर्थिक लाभ के कारण पर्यावरण को नष्ट करने का कार्य प्रारंभ किया, विनाशकारी दोहन नीति के कारण पारिस्थितिकीय असंतुलन भारतीय पर्यावरण में ब्रिटिश काल में ही दिखने लगा था. स्वतंत्र भारत के लोगों में पश्चिमी प्रभाव, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या विस्फोट के परिणामस्वरूप तृष्णा जाग गई जिसने देश में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को जन्म दिया. भारतीय संविधान जिसे 1950 में लागू किया गया था परन्तु सीधे तौर

पर पर्यावरण संरक्षण के प्रावधानों से नहीं जुड़ा था. सन् 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन ने भारत सरकार का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर खिंचा. सरकार ने 1976 में संविधान में संशोधन कर दो महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद 48 ए तथा 51 ए (जी) जोड़ें. अनुच्छेद 48 ए

राज्य सरकार को निर्देश देता है कि 'वह पर्यावरण की सुरक्षा और उसमें सुधार सुनिश्चित करें, तथा देश के वनों तथा वन्य जीवन की रक्षा करें'. अनुच्छेद 51 ए (जी) नागरिकों को कर्तव्य प्रदान करता है कि वे प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करें तथा उसका संवर्धन करे और सभी जीवधारियों के प्रति दयालु रहे. स्वतंत्रता के पश्चात बढते औद्योगीकरण, शहरी करण तथा जनसंख्या वृद्धि से पर्यावरण की गुणवत्ता में निरंतर कमी आती गई. पर्यावरण की गुणवत्ता की इस कमी में प्रभावी नियंत्रण व प्रदूषण के परिप्रेक्ष्य में सरकार ने समय-समय पर अनेक कानून व नियम बनाए. इनमें से अधिकांश का मुख्य आधार प्रदूषण नियंत्रण व निवारण था.

आजादी के 75 वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था : 15 अगस्त 1947, पूरे देश द्वारा मनाया जाने वाला एक दिन और एक संघर्ष के अंत का प्रतीक नहीं था, बल्कि पूरे देश के अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण की शुरुआत थी. इस वर्ष हम एक स्वतंत्र राष्ट्र होने के 75 गौरवशाली वर्षों को पूरा कर रहे हैं. 1947 में भारत की स्वतंत्रता उसके आर्थिक इतिहास का सबसे बड़ा मोड़ था. अंग्रेजों द्वारा किए गए विभिन्न हमलों और विमुद्रीकरण के कारण, देश बुरी तरह से गरीब और आर्थिक रूप से ध्वस्त हो गया था. दरअसल, यह पंडित नेहरू की रणनीति थी कि भारत को शीत युद्ध के दौरान दोनों ओर से बड़ी मदद मिली. सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप ने वस्तुओं और तकनीकी सहायता में लगभग उतना ही योगदान किया जितना कि संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और पश्चिम जर्मनी ने किया था. 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बावजूद, भारतीय राजनीति के सभी नेता चिंतित थे कि व्यापार और निवेश के माध्यम से विदेशी शासन आर्थिक नियंत्रण के बहाने वापसी करेगा. ऐसी स्थिति को रोकने के लिए, भारत ने आर्थिक स्वतंत्रता को अपनाया और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं को तैयार करने के साथ साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में काम किया. पंचवर्षीय योजनाएं राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक विकास की पहल थी जो यूएसएसआर में मौजूद लोगों के साथ तैयार की गई थी.

- आजादी के बाद अर्थव्यवस्था

- 1960 का दशक भारत के लिए विभिन्न आर्थिक चुनौतियों का एक दशक था. रुपये के अवमूल्यन ने सामान्य रूप से कीमतें बढ़ाई दी थीं. 19 जुलाई, 1969 को तत्कालीन प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश के 14 बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने का फैसला किया, जिसका मुख्य उद्देश्य अकेले बड़े व्यवसायों के विपरीत बैंकों द्वारा कृषि क्षेत्र को दिए गए ऋण को बढ़ाना था.

- जब पी.वी. नरसिम्हा राव ने 1991 में प्रधान मंत्री के रूप में पदभार संभाला तब उन्होंने एक नई औद्योगिक नीति की घोषणा की जिसने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण पर जोर दिया, जिससे भारत की विकास दर, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई.

- श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देश की आधारभूत संरचना पर ध्यान दिया व स्वर्णिम चतुर्भुज योजना ने चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और मुंबई को हाईवे नेटवर्क से जोड़ा वहीं गावों को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से शहर व ग्रामीण अर्थव्वस्था को मजबूत किया. अटल जी के प्रधानमंत्रित्व काल के दौरान देश में निजीकरण को उस रफ़्तार तक बढ़ाया गया जहां से वापसी की कोई गुंजाइश नहीं बची. अटल जी ने 1999 में अपनी सरकार में विनिवेश मंत्रालय के तौर पर एक अनोखा मंत्रालय का गठन किया व प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया.

- आर्थिक प्रगति के एक नए युग की शुरुआत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योजना आयोग की जगह नीति आयोग (नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया) का गठन किया. प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया और गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स की शुरुवात की. जीएसटी भारत को उन कुछ देशों में से एक बनाता है जिनके पास कर कानून है जो विभिन्न केंद्रीय और राज्यों के कर कानूनों को एकजुट करता है, सरकार समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए औद्योगिक कॉरिडोर की स्थापना कर रही है.

आजादी के बाद रक्षा क्षेत्र की उपलब्धियां

भारत आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है. 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के बाद से देश ने एक लंबी यात्रा

तय की है और इस दौरान कृषि से लेकर अंतरिक्ष और रक्षा के क्षेत्र तक तमाम उपलब्धियां इसके हिस्से में आई हैं. रक्षा के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों का एक विशाल आंकड़ा है जिसके बारे में एक लेख में बता पाना आसान नहीं है. फिर भी हम आजादी के बाद भारतीय रक्षा क्षेत्र की कुछ प्रमुख उपलब्धियों के बारे में बताने जा रहे हैं जिनके बारे में जानकर हर भारतवासी को नाज होगा.

- परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में उपलब्धियां : आजादी के बाद भारत अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा समेत विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग में आत्मनिर्भरता के पथ पर आगे बढ़ा. 1950 के दशक के अंत तक भारत ने परमाणु ऊर्जा पर काम शुरू कर दिया था. इसी का नतीजा रहा कि 70 के दशक तक स्वदेशी परमाणु ऊर्जा संयंत्र बने, इसके साथ ही भारत ने परमाणु हथियारों के उत्पादन पर भी काम शुरू कर दिया था. 1971 में भारत ने पोखरण में परमाणु विस्फोट कर दुनिया को चौंका दिया. बाद में इसी बम को हथियार से लैस किया गया और दो दशक बाद 1998 में जब अटल बिहारी वाजपेयी के शासन में भारत ने परमाणु शक्ति का दर्जा प्राप्त कर लिया.

- मिसाइल के क्षेत्र में : 1983 में आयुध कारखानों की सहायता से रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) के तत्वावधान में डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) शुरू किया गया. इसके तहत विभिन्न भारतीय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को एक साथ लाया गया. आईजीएमडीपी कार्यक्रम के तहत सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल पृथ्वी, सतह से हवा में मार करने वाली त्रिशूल व आकाश और एंटी टैंक मिसाइल नाग का सफलतापूर्वक विकास किया गया. 2008 में इस कार्यक्रम को बंद कर दिया गया. लंबी दूरी की अग्नि को 1989 में अलग से विकसित और परीक्षण किया गया था. खास बात यह थी इन तकनीकों को अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा अमेरिका की मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था के तहत अत्यधिक प्रतिबंधों के मद्देनजर विकसित किया गया बाद में ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल को रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित किया गया और भारत में निर्मित किया गया.

- हवाई सीमाओं की रक्षा : 1964 में गठित हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) आज भारत के अब तक के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में अपना स्थान बना चुका है. एचएएल ने अपने फाइटर एचएफ-24 मारत को डिजाइन करना शुरू किया था. इसका एयर डायनमिक्स बहुत उन्नत था लेकिन कम पॉवर का इंजन इसकी समस्या थी और कोई भी देश इसका विकल्प देने को तैयार नहीं था. हालांकि एचएएल ने अपने बुनियादी ट्रेवल एचटी-2 और प्रथम स्तर के जेट ट्रेनर एचजेटी-16 को डिजाइन और निर्मित किया जिस पर 60 और 70 के दशक में पायलटों की दो पीढ़ियों ने ट्रेनिंग ली.

- हथियार निर्माण : स्वतंत्रता के बाद के आयुध कारखानों ने 1960 के दशक में कई हथियार बनाए. इनमें स्वदेशी इनसास राइफल, रूसी मूल के टी-92 टैंक, भारतीय मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन, बख्तरबंद वाहन और सैनिक वाहक प्रमुख नाम हैं.

- नौसेना : मझगांव, विशाखापट्टनम, गोवा और गार्डन रीच में शिपयार्ड ने कई युद्धपोत, विध्वंसक पनडुब्बिया अंडर-लाइसेंस का निर्माण किया है, और स्वदेशी रूप से एक परमाणु संचालित पनडुब्बी और विमान वाहक का डिजाइन और निर्माण किया है.

उपसंहार : भारत अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ का जश्न मना रहा है. यह सभी देशवासियों के लिए विशेष अवसर है. 15 अगस्त 1947 को देश सैकड़ों वर्षों की गुलामी की बेड़ियों से आजाद हुआ तब से लेकर अब तक सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, खेल एवं तकनीकी क्षेत्र की विकास यात्रा में देश ने अपनी एक पहचान बनाई है. 75 वर्षों की इस विकास यात्रा में नए कीर्तिमान बने हैं. आज भारत की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में है. यह अनायास नहीं है. दुनिया आज भारत की तरफ देख रही है. बीते 75 सालों में अपनी अंदरूनी समस्याओं, चुनौतियों के बीच देश ने ऐसा कुछ जरूर हासिल किया है, जिसकी तरफ दुनिया आकर्षित हो रही है. हमें 'आत्मनिर्भर भारत-शक्तिशाली भारत-स्वावलंबी भारत' के सपने को सच करते हुए अपनी कर्तव्य परायण भावना का परिचय राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर करना चाहिए, ताकि हम इतने शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर सके. हमारे पूर्वजों ने हमें जो आजादी दी है, उसे हमें सुरक्षित रखना है तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रखना है.

न्याय, समता, स्वतंत्रता पर.....
आओ मिलकर एक नव-पैगाम दें ।
नव भारत के नव निर्माण से
"आत्मनिर्भर भारत" का सपना साकार करें।
आजादी के इस अमृत महोत्सव पर ....
आओ मिलकर करें हम सब संकल्प अब ।
नव-भारत के निर्माण को करना होगा 'देश-मंथन'
अमृत को खोज कर करना होगा आविष्कार अब ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सोशल मीडिया एवं बैंकिंग

- सुश्री रंजना चौधरी
प्रबंधक - राजभाषा
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

सोशल मीडिया को सोशल मीडिया सर्विस के नाम से भी जाना जाता है. इसका मतलब है कि इंटरनेट के प्रयोग के माध्यम से अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ जुड़ना. जहाँ आप एक दूसरे के साथ मित्रता, संबंधों, शिक्षा, रुचियों का आदान प्रदान करते हैं. इससे हम देश विदेश में घट रही घटनाओं के विषय में जान सकते हैं.

सोशल मीडिया का उपयोग आम तौर पर सामाजिक संपर्क, समाचार और सूचना तक पहुंच और निर्णय लेने के लिए किया जाता है. यह स्थानीय और दुनिया भर में अन्य लोगों के साथ एक बहुमूल्य संचार का माध्यम एवं उपकरण है, साथ ही जानकारी साझा करने, बनाने और फैलाने के लिए भी यह अंत्यंत सरल एवं लाभप्रद माध्यम है.

सोशल मीडिया में मुख्यत: फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, यूट्यूब, इन्स्टाग्राम, स्नेपचैट जैसी कई सोशल वेबसाइट के नाम शामिल है. ये सभी वेबसाइट मिलकर इन्टरनेट के जमाने में सोशल मीडिया बनाती है. आज सोशल मीडिया एक ऐसा साधन बन गया हैं जहां आम आदमी भी अपनी दिल की बात को दुनिया के सामने रख सकता है और इसके लिए उसे कोई मेहनत भी नहीं करनी पड़ती है. इसके जरिये न केवल संप्रेषण क्षेत्र में क्रांति आयी है, बल्कि व्यावसायिक और विज्ञापन जगत में भी जबरदस्त परिवर्तन हुआ है. यही नहीं, सूचनाओं के आदान-प्रदान में भी तेजी आयी है. सोशल मीडिया की महत्ता को देखते हुए 30 जून 2010 को वर्ल्ड सोशल मीडिया डे की शुरुआत हुई.

सोशल मीडिया जहां हमारी जिंदगी से जुडकर हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है तो इसके कहीं कहीं प्रतिकूल प्रभाव भी देखने में आ रहे हैं. बहुत अधिक सोशल मीडिया का प्रयोग युवाओं को डिप्रेशन की तरफ ले जा रहा है, कितने शेयर, कितने लाइक्स की चिंता युवाओं को मानसिक रूप से प्रभावित करती है. ऑनलाइन ट्रोलिंग भी आजकल एक आम बात हो गयी है. ट्रोलिंग के चलते कितने युवा डिप्रेशन और तनाव के शिकार हो रहे हैं.

सोशल मीडिया हमारे समाज की विचारधारा को भी प्रभावित करती है. मीडिया को प्रेरक की भूमिका में भी उपस्थित होना चाहिये जिससे समाज एवं सरकारों को प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त हो. मीडिया समाज के विभिन्न वर्गों के हितों का रक्षक भी होता है. वह समाज की नीति, परंपराओं, मान्यताओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति के प्रहरी के रूप में भी भूमिका निभाता है.

आज फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सअप पर अंग्रेजी में लिखे गये पोस्ट या टिप्पणियों की भीड में हिंदी में लिखी गई पोस्ट या टिप्पणियाँ प्रयोगकर्ताओं को ज्यादा आकर्षित करती हैं. सोशल मीडिया में हिंदी भाषा का वर्चस्व का प्रमुख कारण यह है कि हिंदी भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम है.

सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स (social networking sites) आज के इंटरनेट का एक अभिन्न अंग है जो दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है. यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है.

सोशल मीडिया एवं बैंकिंग :- वर्तमान समय सोशल मीडिया का है. हम तेजी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ रहे हैं. युवा पीढी द्वारा इंटरनेट, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि का उपयोग तेजी से किया जा रहा है. आज के समय में इंटरनेट का उपयोग लगभग सभी क्षेत्र में किया जाता है. इंटरनेट सोशल मीडिया में मार्केटिंग का एक अच्छा जरिया बन गया है जो चंद सेकन्ड में लाखों लोगों तक पहुँच जाता है. सोशल मीडिया समाज के सामाजिक विकास में अपना योगदान देता है और कई व्यवसायों को बढ़ाने में भी मदद करता है. यह सोशल मीडिया मार्केटिंग जैसे साधन प्रदान करता है जो लाखों सशक्त ग्राहकों तक पहुँचाता है. हम आसानी से सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया से अलग है. सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफार्म आदि का उपयोग कर अपनी पहुँच बना सकता है. आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है जिसके बहुत सारे फीचर है, जिसमें सूचनाएँ प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित कराना मुख्य रुप से शामिल है. सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो सारे संसार को जोडे रखता है. सोशल मीडिया संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है. यह तीव्र गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान करने सक्षम है. सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति को, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है. सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनसे लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, सामाजवादीगुणों में अभिवृद्धि हुई है.

लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफार्म है. जहाँ व्यक्ति स्वंय को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है. जिसमें फेसबुक, व्हाटसप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफार्म है. सोशल मीडिया सभी जानकारी को एक ही जगह इकट्ठा करता है और सरलता से प्रदान करता है. सोशल मीडिया द्वारा आप कोई भी जानकरी प्राप्त कर सकते हैं. इंटरनेट ने त्वरित मेसेजिंग, इंटरनेट फोरम और सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से व्यक्तिगत बातचीत के नए रुपों को सक्षम और त्वरित किया है.

इस बदलते परिप्रेक्ष्य में बैंक भी इससे अछूते नहीं हैं. सोशल मीडिया के माध्यम से बैंक भी अपने उत्पाद का प्रचार प्रसार करने में आगे आ गये हैं. बैंक भी नई-नई तकनीक अपना कर ग्राहकों को आकर्षित कर रहे हैं एवं डिजिटल सेवाएं प्रदान कर रहे है. जैसे - ऑनलाइन बैंकिंग, एटीएम, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड इत्यादि प्रमुख सेवाएँ बैंक डिजिटली प्रदान कर रहा है. ग्राहक 24X7 किसी भी बैंक शाखा में जाए बिना बैंकिंग सेवा का उपयोग कर सकते हैं. डिजिटल बैंकिंग का उपयोग ग्राहक अपने लैपटॉप, टैबलेट या मोबाईल फोन के जरिए कर सकते हैं. इसमें बैंकों के बीच भी प्रतिस्पर्धा हो रही है. आज के युवाओं के पास इतना वक्त नहीं है कि वह कहीं लाइन लगाकर अपना काम कर सकें. आज के युवा चाहते हैं कि उनका काम तुरंत हो. सोशल मीडिया के कारण युवाओं के काम घर बैठकर ही हो जाते हैं. इस डिजिटल बैंकिंग से ग्राहक उन सभी सुविधाओं का लाभ घर बैठे ले सकते हैं जो उन्हें बैंक की शाखा में जाकर मिलती थी. डिजिटल बैंकिंग का मतलब है तकनीक की मदद से बैंक सेवाओं एवं उत्पादों को ग्राहकों तक पहुँचाना. खाता खोलने से लेकर लेनदेन करने तक तकनीक का इस्तेमाल डिजिटल बैंकिंग कहलाता है तथा डिजिटल प्लेटफार्म के जरिए बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाना डिजिटल बैंकिंग कहलाता है. भारत सरकार की अनेक योजनाएँ जैसे - मनरेगा, पीएम किसान योजना आदि अपनी ट्रांजेक्शन फाइलें इन इंटरफेसों के जरिए बैंकों के सर्वर पर भेजते हैं और इंटेलिजेंट सॉफ्टवेयर इन्हें बिना किसी व्यक्ति की मदद से प्रोसेस कर लाखों भारतीयों के खाते में धन प्रेषित कर देते हैं. डिलीवरी चैनल में वेब सर्विस, मोबाइल एप एवं अनेक सिक्योरिटी से जुडी तकनीक का इस्तेमाल किया है. इनकी मदद

से बैंकिंग सेवा 24X7 ग्राहकों के पास पहुँचती है. कियोस्क मशीन का भी उपयोग ग्राहक कर रहे हैं.

सोशल मीडिया के कारण बैंकों में भी काफी बदलाव आया है. बैंकों में डिजिटलीकरण हो गया है. इस डिजिटल बैंकिंग सुविधा ने काफी कुछ आसान कर दिया है. बैंक द्वारा दिए गए डिजिटल कार्ड यानि क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, नेट बैंकिंग तथा मोबाईल बैंकिंग के माध्यम से डिजिटल तरीके से पैसों का लेनदेन करना सुविधाजनक हो गया है. पहले जहाँ हम बैंकों में पैसे निकालने के लिए या जमा करने हेतु घंटों कतार में खड़े रहकर प्रतीक्षा करते थे आजकल एटीएम कार्ड के जरिए हम आसानी से पैसे निकाल सकते हैं तथा मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से किसी को भी पैसे ट्रांसफर भी कर सकते हैं, पहले बैंक अवकाश में हम अपना बैंक का काम कर नहीं पाते थे परंतु अब हम बैंक अवकाश के समय में भी लेनदेन कर सकते हैं. हम ऑनलाइन शॉपिंग भी कर सकते है. हम कुछ भी खरीद सकते है. ऑनलाइन खरीद पर कभी कभी डिसकाउंट भी मिल जाता है. जिससे फायदा भी होता है. यह सब हम अपने मोबाइल या लैपटॉप के जरिए कर सकते हैं. डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से यानि इंटरनेट बैंकिंग की सुविधा का उपयोग कर ग्राहक बैंक में अपना खाता खोल सकते हैं, ऋण हेतु आवेदन कर सकते हैं. मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से अपने खाते की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, खाते का विवरण देख सकते हैं. अपने लेनदेन की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. विभिन्न प्रकार के फार्म तथा आवेदन फार्म भी डाउनलोड कर सकते हैं. मोबाइल बैंकिंग से हम अपने बिलों का भुगतान भी करते हैं. पहले हमें बिल जमा करने हेतु लंबी कतार में जाकर खड़ा होना पड़ता था लेकिन मोबाईल बैंकिंग के जरिए अब यह सब आसान हो गया है, ग्राहक घर बैठे ही मोबाईल बैंकिंग द्वारा बिलों का भुगतान कर सकता है. एटीएम कार्ड यानि डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड का उपयोग वह कहीं भी कर सकता है. कहीं भी राशि निकाल सकता है. उसे समय का बंधन नहीं रहेगा. सोशल मीडिया द्वारा हुए डिजिटलीकरण से काफी कुछ आसान कर दिया है. अब ग्राहकों को लंबी कतारों में खड़ा नही होना होगा. सभी जानकारी स्वयं के मोबाइल में एप द्वारा मिल जायेगी. जिस काम को करने में ग्राहक को बैंक में कई घंटे लग जाते थे अब वह घर में बैठकर ऑनलाइन बैंकिंग सुविधा द्वारा कुछ ही मिनटों में कर सकता है. मोबाईल द्वारा ग्राहक अपने यात्रा हेतु टिकट बुक कर सकता है, व्यापार में भी निवेश कर सकता है, मेडिकल पैकेज भी ऑनलाइन ले सकता है. दूसरे शहर जा कर भी बिना पैसे दिए डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड द्वारा ऑनलाइन से कोई भी चीज खरीद सकता है. उसे अपने आप भौतिक रूप से नकद रखने की आवश्यकता नहीं है. जिससे उसे नकद रखने की समस्या से छुटकारा मिल गया है तथा साथ ही साथ उसकी नकदी चोरी होने का खतरा भी नहीं होगा. दरअसल एटीएम पर प्रदान की गई कुछ जानकारी से ही हमारे अकाउंट की पहचान होती है और हमारे अकाउंट से लेनदेन करना आसान होता है. अगर ग्राहक को इंटरनेट बैंकिंग के बारे में कोई भी सहायता चाहिए तो ग्राहक, बैंक के कस्टमर केयर नंबर पर कॉल कर सकते हैं. आज के दौर में बैंक में ग्राहकों हेतु अधिकाधिक सेवा डिजिटल माध्यम से उपलब्ध है. एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग और मोबाईल बैंकिंग फोन बैंकिंग, ई-कॉर्नर सेल्फ सर्विस किओक्स, कैश रिसायकलर इत्यादि डिजिटल बैंकिंग के माध्यम है. जिससे ग्राहकों द्वारा किया गया लेनदेन तुरंत तथा सुरक्षित होता है.

डिजिटल बैंकिंग की सुविधाओं से हमारा समय भी बचता है. आज कल हर कोई डिजिटल के माध्यम से ही अपना काम करना चाहता है. जिससे उसका समय भी बचे और उर्जा भी बचे. डिजिटल बैंकिंग द्वारा ग्राहक कहीं भी और कभी भी बैंकिंग सुविधा का उपयोग कर सकते हैं. बैंकों में डिजिटल माध्यम से इंटरनेट बैंकिंग द्वारा कई लेनदेन किए जा सकते हैं जैसे - अपने खाते में नकदी जमा करना, अपने खाते से नकदी निकालना, किसी और के खाते में राशि अंतरण करना, चेक जमा करना, खाता खोलना, ऋण आवेदन करना आदि. इंटरनेट बैंकिंग यह बैंक के साइट पर जा कर की जाती है. जिससे ग्राहक सीधे बैंक से कनेक्ट होता है.

तकनीक या प्रौद्योगिकी की सहायता या माध्यम से बैंक को ग्राहकों तक पहुँचाना डिजिटल बैंकिंग कहलाता है. तकनीक के माध्यम से आप हमेशा अपने बैंक से जुड़े रहते हैं और आप तकनीक की मदद से कभी भी उस की सेवाओं का फायदा उठा सकते हैं. डिजिटल इंडिया जोकि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना और आव्हान भी है. डिजिटलाइजेशन की प्रक्रिया ने अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. इस डिजिटल बैंकिंग द्वारा बैंक ग्राहक को बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर सकते हैं, नगदी रहित लेन देन में बढ़ोत्तरी होती है. एटीएम के उपयोग में वृद्धि होती है, ग्राहक इस बात से आश्वस्त रहता है कि वो कभी भी और कहीं भी पैसों का लेनदेन कर सकता है. ग्राहक घर बैठे ही खाता खोल सकते है तथा खाते का रखरखाव देखना आसान होता है. उत्पादकता में वृद्धि होती है, आज हमारे बैंक द्वारा कई सेवाएँ ग्राहकों को प्रदान की जाती हैं जैसे सेन्ट मोबाईल, सेंट यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग, सेन्ट मोबाईल, एटीएम,सेन्ट स्मार्ट पे. यह सभी सुविधाओं के साथ साथ और भी कई ऑनलाइन सेवाएँ भी है. आरटीजीएस तथा एनईएफटी करना भी अब आसान हो गया है. ग्राहक इंटरनेट एवं मोबाइल के जरिए संपूर्ण बैंकिंग अपने घर या अपने ऑफिस किसी भी स्थान से कर सकता है. बैंकों द्वारा ग्राहकों को निम्नलिखित ऑनलाइन बैंकिंग या वैकल्पिक भुगतान प्रणाली

उपलब्ध करायी जा रही हैं.

एटीएम : एटीएम यानि ऑटोमेटेड टेलर मशीन जिससे नगद भुगतान के अलावा बैलेंस जानकारी, चेक बुक आदेश, निधि अंतरण आदि किया जा सकता है. एटीएम मशीन से ग्राहकों को अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई है. उन्हें नकद निकालने हेतु शाखा की लंबी कतार से मुक्ति मिल गई. अन्य बैंकों के ग्राहकों द्वारा हमारे एटीएम के अधिक से अधिक इस्तेमाल करने पर लेनदेन प्रभार के तौर पर बैंक को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है.

इंटरनेट बैंकिंग : इंटरनेट बैंकिंग से ग्राहक कहीं से भी किसी भी दिन, किसी भी वक्त निधि अंतरण कर सकते हैं. उन्हे इसके लिए शाखा में जाने की आवश्यकता नहीं है. इंटरनेट बैंकिंग यानि ऑनलाइन बैंकिंग से ग्राहक निधि अंतरण, आरटीजीएस, एनईएफटी, खाता खोलना, ऋण आवेदन फार्म भरना, सावधि जमा खाता खोलना अथबा बंद करना, युटिलिटी बिल पेमेंट करना, ई-फाईलिंग करना इत्यादि सभी सुविधाओं का लाभ उठा सकता है.

मोबाईल बैंकिंग : मोबाईल बैंकिंग में भी इंटरनेट बैंकिंग जैसी सभी सुविधाएँ उपलब्ध है. मोबाईल बैंकिंग में उपलब्ध डेबिट कार्ड एवं क्रेडिट कार्ड कंट्रोल सुविधा को सबने सराहा है.

ई-वालेट : ऑनलाइन द्वारा अपना यात्रा टिकिट, अपने मोबाईल रिचार्ज, अपने दैनंदिन सामान, रेस्टॉरंट का बिल, ऑनलाइन शॉपिंग करने के लिए ग्राहक को अपनी व्यक्तिगत जानकारी भरनी होती है. इसी प्रक्रिया को आसान करने हेतु ई-वालेट बनाया गया है. ई-वॉलेट यानि जिसे हम बटुआ भी कह सकते हैं. अर्थात एक वर्चुअल वालेट. ग्राहक बार-बार दी जाने वाली बैंकिंग तथा अन्य व्यक्तिगत जानकारी ई-वालेट में देकर रजिस्ट्रर्ड कर सकता है. अपने हर खरीदी में भुगतान का माध्यम रजिस्टर्ड ई-वालेट कर आसानी से भुगतान कर सकता है. उसे बार - बार अपनी जानकरी देनी नहीं होगी.

यूपीआई : भारत सरकार द्वारा भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम के सहयोग से यूपीआई, बीमा जैसे भुगतान हेतु मोबाईल एप्लीकेशन बनाए गए हैं. यूपीआई अर्थात यूनिफाईड पेमेंट इंटरफेस जोकि एक मल्टी बैंकिंग प्रणाली है. इसका उपयोग स्मार्ट फोन के माध्यम से किया जा सकता है. इसमें उपयोगकर्ता को अपना एक वर्चुअल आई.डी बनाना होता है. यूपीआई उपयोगकर्ता अपना क्यूआर कोड बनाकर व्यावसायिक लेनदेन भी कर सकता है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वतंत्र भारत बनाम सेन्ट्रल बैंक - सफरनामा

- संजय भट्ट
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

आज हम अपने देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं वहीं विगत 21 दिसम्बर 2021 को हमने अपने बैंक का 111 वां स्थापना दिवस मनाया है. यदि हम दोनों को समानांतर तौर पर देखें तो जहां हमारे देश ने अपने 75 वर्ष के सफर में बहुत से उतार चढाव देखे तो वहीं हमारे बैंक ने भी अपने 111 वर्ष के लंबे सफर में कई उपलब्धियां हासिल की तो वहीं बहुत कठिन समय भी देखा है. आज हम दोनों के 75 वर्षों के सफर पर समानांतर रूप से बात करते हैं.

सैकड़ों वर्षों की गुलामी की बेड़ियों से हमारा देश दिनांक 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ. तब से लेकर आज तक सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, खेल एवं तकनीकी क्षेत्र की विकास यात्रा में देश ने अपनी एक पहचान बनाई है. 75 वर्षों की इस विकास यात्रा में कई नए कीर्तिमान बने हैं.

भारत की पहचान आज एक सशक्त राष्ट्र के रूप में की जाती है. यह अनायास ही नहीं हुआ है. दुनिया आज भारत की ओर देख रही है. बीते 75 सालों में अपनी अंदरूनी समस्याओं, चुनौतियों के चलते भी देश ने ऐसा कुछ जरूर हासिल किया है, जिसकी तरफ दुनिया आकर्षित हो रही है. देश के पास गर्व करने के लिए उपलब्धियां हैं तो कुछ अफसोस भी हैं.

हमें आजादी तो मिल गई लेकिन वह आजादी आज किस रूप में है. हमारे पूर्वजों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, राजनेताओं ने आजाद भारत का जो सपना देखा था. उनकी नजरों में आजादी के जो मायने थे क्या उसके अनुरूप हम आगे बढ़े हैं. संविधान में एक आदर्श देश की जो परिकल्पना की गई है उसे हम कितना साकार कर पाए हैं. नागरिकों से समाज और समाज से देश बनता है. एक बेहतर नागरिक एक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है. एक सजग समाज देश को उन्नति के रास्ते पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है. सवाल है कि एक देश और व्यक्ति के रूप में आज हम कहां खड़े हैं, इसका एक सिंहावलोकन करना जरूरी है. आजादी के इन सालों में हमने क्या खोया और क्या पाया है, आज इसकी भी बात करनी जरूरी है.

15 अगस्त 1947 को हम आजाद तो हो गए लेकिन यह आजादी विभाजन के साथ आई. भारत की जमीन से नया देश पाकिस्तान अस्तित्व में आया. देश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से में बने इस नए देश की वजह से भारत को अपना एक बड़ा भूभाग और लोगों को खोना पड़ा. इसके बाद कश्मीर और चीन में हमें अपनी जमीन खोनी पड़ी. हालांकि, सिक्किम को अपने साथ जोड़ने में हम कामयाब हुए. तब से लेकर अब तक भारत अपनी सीमा की हिफाजत करता आया है. कई राज्यों में अलगाववादी ताकतों, नक्सलवाद, आतंकवाद की चुनौती से निपटते और सीमा पर चीन एवं पाकिस्तान से लड़ते हुए भारत ने देश की अखंडता एवं संप्रभुता पर आंच नहीं आने दी है. आंतरिक चुनौतियों एवं सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने की कुटिल चालों को नाकाम करते हुए भारत ने अपनी अनेकता में एकता की खासियत एवं धर्मनिरपेक्षता की भावना बरकरार रखी है.

आम आदमी को सशक्त बनाने के लिए बीते दशकों में सरकारें जनकल्याणकारी नीतियां और योजनाएं लेकर आईं. योजनाओं का लाभ गरीबों एवं कमजोर वर्गों तक पहुंचाया गया. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, मनरेगा जैसे कार्यक्रमों एवं योजनाओं ने आम आदमी को सशक्त बनाया है. इन महात्वाकांक्षी योजनाओं से विकास की गति तेज हुई.

उदारीकरण के दौर के बाद भारत तेजी से विकास के रास्ते पर आगे बढ़ा है. आर्थिक, सैन्य एवं अंतरिक्ष क्षेत्र में इसने सफलता की बड़ी छलांग लगाई है. चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ी है. आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बना हुआ है. सैन्य क्षेत्र में भारत एक महाशक्ति बनकर उभरा है. परमाणु हथियारों से संपन्न भारत के पास दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली सेना है. मिसाइल तकनीकी में दुनिया भारत का लोहा मान रही है. अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत ने नए-नए कीर्तमान स्थापित किए हैं. मंगल मिशन की सफलता एवं रॉकेट प्रक्षेपण की अपनी क्षमता के बदौलत भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में महारथ रखने वाले चुनिंदा देशों में शामिल है. आईटी सेक्टर में देश अग्रणी बना हुआ है. इन उपलब्धियों ने देश को सुपरपावर बनने के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया है.

जाहिर है कि आज भारत के पास दुनिया को देने के लिए बहुत कुछ

है लेकिन इन सफलताओं एवं उपलब्धियों के बावजूद सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हुआ है. व्यक्ति से लेकर समाज, राजनीति सभी क्षेत्रों में मूल्यों का पतन देखने को मिला है. राजनीति का एक दौर वह भी था जब रेल हादसे की जिम्मेदारी लेते हुए केंद्रीय मंत्री अपने पद से इस्तीफा दे दिया करते थे. एक वोट से सरकार गिर जाया करती थी. भ्रष्टाचार में नाम आने पर नेता अपना पद छोड़ देते थे लेकिन आज वस्तुस्थिति कुछ अलग ही है. बेहतर समाज एवं राष्ट्र बनाने की जिम्मेदारी हम सभी की है. इसके लिए हम सभी को आगे आना होगा. तभी जाकर एक बेहतर भारत और 'न्यू इंडिया' के सपने को साकार किया जा सकेगा.

यदि अब हम अपने बैंक के 75 वर्षों के सफर पर एक नजर डालें तो हम पाएंगे कि हमारा बैंक न केवल कई उत्पादों का जन्मदाता रहा है अपितु अपने नवोन्मेष पहलों के लिए भी जाना जाता है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया पूर्णत: भारतीयों के स्वामित्व व प्रबंधन वाला प्रथम स्वदेशी बैंक था. बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला ने बैंक ऑफ इंडिया के श्री एच.पी.स्ट्रीगफेलो के इस मत को कि कोई भी भारतीय किसी बैंक प्रबंध करने में सक्षम नहीं है गलत साबित करते हुए वर्ष 1911 में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की. न केवल सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की बल्कि 12 वर्षों के छोटे से समय में ही यूरोपियन द्वारा संचालित मुश्किल में फंसे दो बैंकों का प्रबंधन भी अपने हाथों में ले लिया. वास्तव में देखा जाए तो भारतीय बैंकिंग के इतिहास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का उदय एक अद्वितीय घटना है.

अपनी स्थापना से लेकर अपनी रजत जयंती तक कई उतार चढाव देखते हुए भी हमारा बैंक भारत का सबसे बडा बैंक था और उसकी ख्याति निर्विवाद थी. इसके निदेशकगण प्रमुख व्यवसायी व सम्मानित लोग थे. स्वतंत्रता के तुरंत बाद का समय बैंक के लिए बहुत ही कष्टदायक रहा. बंटवारे के समय बैंक की 77 शाखाएं और भुगतान कार्यालय पाकिस्तान में थे तथा उस दौरान कई शाखाओं को बंद करना पडा. वर्ष 1946 में बैंक की 362 शाखाएं थी जो वर्ष 1947 में घटकर 306 एवं वर्ष 1949 में घटकर 289 रह गयी.

भारत की स्वतंत्रता ने नियोजित आर्थिक प्रगति की प्रतिबद्धता के साथ सामाजिक शासन की नींव रखी जो पूर्व में अपनायी जा रही पूंजीवादी नीतियों की विदाई थी. भारत सरकार एक लोक कल्याणकारी व्यवस्था स्थापित करने के लिए शीघ्र आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए प्रतिबद्ध थी. गरीबों का जीवन स्तर सुधारने समाजवादी मंशा के कारण सरकार बैंकिंग में अधिक रूचि ले रही थी वह नहीं चाहती थी कि देश की आर्थिक शक्ति गिने-चुने हाथों में केंद्रित होकर रह जाएं. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भी भारत सरकार की नीतियों के अनुसरण में बदलते हुए आर्थिक परिदृश्य के अनुकूल अपनी गतिविधियों को विविधतापूर्वक विस्तारित किया. जिनमें बेहतर प्रतिफल के कारण सावधि जमाओं में वृद्धि अधिक हो रही थी वहीं दूसरी ओर उद्योगों का वित्तपोषण भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया था. सामाजिक बैंकिंग के माहौल में बैंक में प्राथमिकता क्षेत्र कृषि एवं लघु उद्योगों में ऋण संवितरण शुरू किया.

वर्ष 1961 में बैंक ने अपना स्वर्ण जयंती समारोह मनाया और उन सभी स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जहां इसकी उपस्थिति थी. मुंबई में मुख्य अतिथि महाराष्ट्र तत्कालीन राज्य के राज्यपाल श्री शिव प्रकाश ने कहा कि यह महान बैंक अपने गौरवशाली अस्तित्व को बनाए रखते हुए 50 वर्षों से लोगों को उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कर रहा है. सरकार की ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शाखाएं खोलने की इच्छा का अनुसरण करते हुए बैंक ने अर्ध शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाएं खोलनी शुरू की. इसके अतिरिक्त वर्ष 1963 में जोधपुर कमर्शियल बैंक का सेंट्रल बैंक में विलय हो गया तथा वर्ष 1950 से वर्ष 1969 के बीच नई शाखाएं खोलने से शाखाओं की संख्या 290 से बढ़कर 671 हो गई. दिनांक 23 फरवरी 1963 को बर्मा में बैंकों का राष्ट्रीयकरण होने से बैंक को अपनी रंगून शाखा खोनी पड़ी तत्पश्चात भारत-पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के समय दिनांक 30 जून 1965 को बैंक की 5 शाखाओं का अधिग्रहण पाकिस्तान सरकार ने कर लिया. सरकार जानती थी कि भारत के औद्योगिकीकरण की कुंजी बैंकिंग उद्योग के पास है अत: इसे अपने हाथ में ले लेना एक लोकप्रिय कदम ही होगा. सरकार ने 19 जुलाई 1969 की आधी रात को एक अध्यादेश जारी करते हुए द सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड सहित 14 बड़े वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया.

आज हमारे बैंक के पास 7 राज्य में परिचालन रत 48 अग्रणी जिले हैं. शाखा विस्तार एक प्रमुख आवश्यकता थी और ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाएं खोलने पर विशेष जोर दिया गया था 29 अगस्त 1990 को 40 शाखा वाले पूर्वांचल बैंक का सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में विलय हुआ. वर्ष 1975 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम के प्रवर्तन का अनुसरण करते हुए बैंक ने 8 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना की.

सरकार ने हिंदी को देश को जोड़ने वाली भाषा माना और उसके प्रयोग पर बल दिया. राजभाषा के अनुपालन हेतु राजभाषा विभाग स्थापित किए गए. हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी में लिखे हुए फॉर्म को स्वीकार करना शुरू कर दिया गया और इन क्षेत्रों में द्विभाषी ऋण आवेदन स्वीकार किए जाने लगे तथा हिंदी में हस्ताक्षरित चेक सहजता से स्वीकार किए जाते थे. इस बात पर जोर दिया गया कि पत्राचार हिंदी में किया जाए. इसे सुनिश्चित करने के लिए हिंदी

में 10 मानक पत्रों की पुस्तिका बनाई गई और इसे हिंदी राज्यों के कार्यालयों और शाखाओं को भेजा गया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की उपलब्धियों की एक लंबी सूची है. अगस्त 1980 में बैंक ने सेंट्रल कार्ड की शुरुआत की जो भारत का पहला क्रेडिट कार्ड था वर्ष 1982 में हमारा बैंक मास्टर कार्ड का प्रमुख सदस्य बना तथा वर्ष 1991 में वीजा इंटरनेशनल से सम्बद्ध हुआ. वर्ष 1985 में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने बैंक ऑफ अमेरिका के साथ डॉलर ट्रैवलर्स चेक के लिए टाइअप किया इन चेकों पर बैंक का नाम तथा लोगो था. जून 1984 में संयुक्त उद्यम के तहत लुसाका जांबिया में इंडो जांबिया बैंक की स्थापना की गई. वर्ष 1987 में सहारा इंटरनेशनल एयरपोर्ट मुंबई के डिपार्चर लाउन्ज में बैंक द्वारा मनी एक्सचेंज काउन्टर खोले गए. वर्ष 1986 में बैंक ने अपना प्लेटिनम जुबली महोत्सव मनाया.

बैंक ने इस अवधि में मशीनीकरण एवं कंप्यूटरीकरण पर विशेष ध्यान दिया. अहमदाबाद दिल्ली, हैदराबाद, चेन्नई, भोपाल, पुणे आदि अंचलों में मिनी कंप्यूटर सिस्टम स्थापित किए गए तथा सॉफ्टवेयर को बैंक द्वारा ही विकसित किया गया. केंद्रीय कार्यालय में मार्च 1991 में एक मेनफ्रेम कंप्यूटर प्रणाली स्थापित की गई. बैक -ऑफिस मैकेनाइजेशन भी शुरू कर दिया गया जिसके तहत वर्ष 1984 में हैदराबाद में पहला बैक ऑफिस प्रारंभ हुआ. वर्ष 1999 में बैंक में अपनी स्वयं की वेबसाइट का शुभारंभ किया. ग्राहक आधार को व्यापक बनाते हुए वित्तीय उत्पादों की श्रेणी को विस्तृत करते हुए व्यवसाय में पर्याप्त वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वर्ष 2000 में एक दीर्घावधि भावी योजना बनाई गई जिसे तीन चरणबद्ध प्रणाली के माध्यम से कार्यान्वित करना था. इस समय तक यद्यपि 1500 से अधिक शाखाएं कंप्यूटरीकृत थी परंतु एक दूसरे से जुड़ी हुई नहीं थी. इस समस्या का समाधान करने के लिए बैंक में कोर बैंकिंग सॉल्यूशन (सीबीएस) के माध्यम से अपने ग्राहकों को परस्पर जोड़ने के लिए टाटा कंसलटेंसी सर्विस लिमिटेड के साथ अनुबंध किया. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने वाइड एरिया नेटवर्क स्थापित किया जो बड़े शहरों के कार्यालयों तथा कई अधिकारियों को परस्पर जोड़ता है और बैंक के स्वामित्व की एक ईमेल प्रणाली सेंट मेल प्रतिस्थापित की जो बैंक की सभी शाखाओं और प्रशासनिक कार्यालयों को परस्पर जोड़ती है. बैंक का अपने ग्राहकों के साथ हमेशा घनिष्ठ संबंध रहा है. कर्मचारियों को ग्राहकोन्मुख एवं ग्राहक संबंधों को और अधिक प्रगाढ बनाने तथा ग्राहकों एवं कर्मचारियों को जोड़ने हेतु पूरे वर्ष 'सी4सी- ग्राहकों हेतु सेन्ट्रलाइट' नामक संप्रेषण कार्यक्रम चलाया गया.

अपने शताब्दी वर्ष में बैंक नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों का आधिकारिक बैंकिग पार्टनर रहा. खेल अधिकारियों, खिलाडियों की बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिल्ली में केवल खेलों को समर्पित एक शाखा खोली गयी. बैंक ने दिल्ली स्थित अपनी शाखाओं के माध्यम से टिकटों की भी बिक्री की, इसके अतिरिक्त मास्टर कार्ड के सहयोग से कॉमन वेल्थ क्रेडिट कार्ड का शुभारंभ किया गया.

अपनी विकास यात्रा के पथ पर बैंक ने जो उडान भरी वह उसके साइनेज में परिलक्षित हुई. यद्यपि बैंक का लोगो वही रहा परंतु नीले (जोकि शांति एवं स्थिरता) तथा लाल (जो तेजस्वी विचार तथा सकारात्मक व्यवहार को परिलक्षित करते है) रंग को समाविष्ट करते हुए उसमें परिवर्तन किया गया.

बैंक का शताब्दी वर्ष बड़े ही शानदार ढंग से मनाया गया. वर्ष के आरंभ में आयोजित कार्यक्रम में भारत की महामहिम राष्ट्रपति ने अपनी उपस्थिति से बैंक को नवाजा और बैंक के शताब्दी महोत्सव की स्मृति में डाक टिकट जारी किया. इस अवसर पर हमारे बैंक ने वित्तीय समावेशन अभियान के अंतर्गत बैंक द्वारा 100 गांवों के अभिग्रहण और 100% शाखाओं को सफलतापूर्वक सीबीएस प्लेटफॉर्म पर लाने की घोषणा की.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मानों की सूची बहुत लंबी है जिसका यहां वर्णन करना संभव नहीं है. जिसमें एमएसएमई वित्तपोषण, सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक ऋण प्रदाता, टीएफसीआई का तकनीकी पुरस्कार, इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार, विपणन उत्कृष्टता पुरस्कार इत्यादि शामिल हैं.

यदि हम केवल भारत की स्वतंत्रता के पश्चात की बात करें तो सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया कई बातों में अग्रणी रहा है. आवर्ती जमा की संकल्पना, चालू / नगदी / ऋण खातों का मशीनीकरण, रुपया यात्री चेक का शुभारंभ, प्रथम क्रेडिट कार्ड का शुभारंभ, क्रेडिट कार्डधारकों को बैंक की किसी भी शाखा में प्रतिमाह 2500/- तक के चेक नगदीकरण की सुविधा, बैंक ऑफिस मशीनीकरण का शुभारंभ, डेबिट कार्ड का शुभारंभ, अपने संस्थापक के सम्मान में डाक टिकट जारी करने वाला पहला भारतीय बैंक बना, यह डाक टिकट भारत के राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया. इसके अतिरिक्त अन्य कई उपलब्धियां हैं जो हमारे बैंक के खाते में हैं.

आज भी हमारा बैंक देश के अग्रणी बैंकों में से एक है. जिसका पूरे देश के 28 प्रदेशों में 4500 से भी अधिक शाखाओं का बृहद नेटवर्क है. हमारे बैंक के पूरे देश में 3500 से भी अधिक एटीएम स्थापित किए गए हैं जो हमारी अपनी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा को परिलक्षित करते हैं. अपने बैंक को उत्कृष्टता की ऊंचाइयों तक ले जाने का दायित्व हम सभी का है. आइये हम अपने बैंक की सफलता के नए आयाम स्थापित करें.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष

- सौरभ गुप्ता
सेंट्रल बैंक ऑफ़ इण्डिया
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

भारत विविधता की भूमि है जहां विभिन्न जाति, पंथ, धर्म, संस्कृति और विश्वास के लोग एक साथ रहते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेकता में एकता है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जो हर साल 15 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। 15 अगस्त 1947 को हमारा देश ब्रिटिश शासन से मुक्त होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र बना था। 14 और 15 की मध्य रात्रि को कई विद्रोह के बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुयी थी। हमे स्वतंत्र हुए आज पूरे 75 वर्ष हो गए हैं। हमारा भारत 200 वर्ष तक अंग्रेजों के अधीन था। जिसके बाद हमारे देश में आजादी के लिए काफी लड़ाई लड़ी गयी। जिसमे बहुत से महापुरुषों ने अपना बलिदान दिया और भारत को एक स्वतंत्र देश बनाया।

आजादी से पहले भारतीयों की स्थिति बहुत दयनीय थी क्योंकि वे अंग्रेजों के शासन में थे। दशकों तक ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों को बहुत कुछ झेलना पड़ा। भारतीयों के साथ गुलाम जैसा व्यवहार किया जाता था, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई और भारत को आजाद कराने के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। यही कारण है कि स्वतंत्रता दिवस भारतीयों के लिए बहुत मायने रखता है। स्वंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में पूरा देश हर वर्ष पूरे हर्ष और उल्हास के साथ इस दिन को एक त्यौहार के रूप में मनाता है।

"क्रांति की तलवार विचारों के पत्थर पर तेज होती है
-भगत सिंह"

स्वतंत्रता दिवस भारतीय इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि यह हमें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की बहादुरी और संघर्ष की याद दिलाता है। इस दिन हम अपने उन सेनानियों को श्रद्धांजलि देते हैं जिन्होंने हमारी आजादी के लिए संघर्ष किया और अपने प्राणों की आहूति दे दी। तब से हम हर साल 15 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। इसे राष्ट्रीय अवकाश माना जाता है और सभी संगठन और संस्थान राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और देश भर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

यह दिन देश भर में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना को प्रज्वलित करने के लिए मनाया जाता है। स्वतंत्रता को लेकर हर नागरिक का नजरिया अलग होता है। एक युवा इस दिन को देश की महिमा और ताकत का जश्न मनाने के लिए लेता है, जबकि दूसरों के लिए यह लंबे समय तक दमन और क्रूरता की याद दिलाता है जिसे हमारे लोगों ने झेला है। यह न केवल स्वतंत्रता का उत्सव है बल्कि देश की विविध संस्कृति के साथ एकता का भी उत्सव है।

लगभग दो शताब्दियों तक अंग्रेज हम पर शासन करने में सफल रहे। साथ ही देशवासियों को इन अत्याचारियों के कारण बहुत कुछ सहना पड़ा यह सब 17वीं शताब्दी के आसपास भारत में अंग्रेजों के आगमन के साथ शुरू हुआ। 1600 के आसपास अंग्रेज व्यापारी के रूप में भारत आए लेकिन समय बीतने के साथ उन्होंने खुद को भारत में एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित किया और इसे अपना उपनिवेश बना लिया। जैसे-जैसे समय बीतता गया ब्रिटिश साम्राज्य का अत्याचार बढ़ता गया और भारतीय जनता बुरी तरह पीड़ित हुई।

1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम छिड़ गया और तब से लोगों ने शासकों के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने वालों को प्रताड़ित किया गया, गोली मार दी गई या जेल भेज दिया गया लेकिन स्वतंत्रता सेनानियों ने हार नहीं मानी और लड़ते रहे। 20वीं सदी की शुरुआत तक, भारत ने कई स्वतंत्रता सेनानियों और नेताओं को देखा। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, गोपाल कृष्ण गोखले और कई अन्य जैसे कई नेताओं के मार्गदर्शन में ब्रिटिश सत्ता के प्रभुत्व के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध, आंदोलन, मार्च आदि हुए। बहुत से लोगों ने इस देश की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

अंत में, स्वतंत्रता सेनानियों की कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और बलिदान का भुगतान तब होता है जब भारत 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को स्वतंत्रता की ओर बढ़ता है। भारत के पहले प्रधानमंत्री एक भाषण के माध्यम से ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता की

घोषणा करते हैं। यह भारत में ब्रिटिश शासन का अंत था और भारत को स्वतंत्रता मिली। भारतीय कैबिनेट में केवल 13 मंत्री थे जिन्होंने 15 अगस्त 1947 को शपथ ली थी। भारत एक शांतिपूर्ण देश है स्वतंत्रता दिवस के समय कोई आधिकारिक राष्ट्रगान नहीं था।

"खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं
-महात्मा गांधी"

जैसा कि विवेकानंद ने कहा था कि 'यह जीवन स्वतंत्रता का एक जबरदस्त दावा है'। हर साल हम उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं जिन्होंने हमारी आजादी के लिए अपने प्राणों की आहूति दी। पहली बार प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत का झंडा फहराया और 15 अगस्त को लाल किले पर सभी भारतीयों को भाषण दिया। उस दिन से सभी स्कूल, कॉलेज, संगठन और भारत का प्रत्येक नागरिक इस दिन को मनाता है।

प्रारंभ में भारत में पाए जाने वाले संसाधनों और खनिजों की अधिकता के कारण भारत को 'सोने की चिड़िया' के रूप में वर्णित किया गया था। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने "फूट डालो और राज करो" की नीति लागू करके सब कुछ छीन लिया। स्वतंत्रता सेनानियों ने सोचा कि इसे खत्म करना ही होगा, नहीं तो हमारी पीढ़ी भविष्य में भी गुलामी में जीएगी। भगत सिंह, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू आदि जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने हमें स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया, इसलिए अब जिम्मेदार नागरिक बनना हमारा कर्तव्य है।

हमने अपनी आजादी के लिए लड़ाई लड़ी, फिर भी अपने अग्रदूतों जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, चंद्र शेखर आजाद और भगत सिंह के निर्देशन में सख्ती और उदारता से काम किया। इन अग्रदूतों का एक हिस्सा हिंसा का रास्ता चुनता है जबकि कुछ अहिंसा का रास्ता अपनाते हैं। इनका निर्णायक बिंदु अंग्रेजों को देश से खदेड़ना था। इसके अलावा 15 अगस्त 1947 को बहुप्रतीक्षित सपना उम्मीद के मुताबिक पूरा होता है। यह हमें ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता के पीछे हजारों लोगों के बलिदान की याद दिलाता है। यह महत्वपूर्ण है कि यह हमें गौरवान्वित महसूस कराता है और हमें उन सभी शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों और उन सभी लोगों को सम्मानित करने का मौका देता है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस का बहुत महत्व है क्योंकि यह भारतीय दिलों को गर्व और देशभक्ति से भर देता है और उन्हें अपने देश के लिए कुछ करने के उत्साह और दृढ़ संकल्प से भी भर देता है। यह हमें जमीन से जुड़े रहने और अपनी जड़ों को नहीं भूलने की भी याद दिलाता है।

यह भारतीयों को आभारी, विनम्र होने और उन सभी लोगों को सम्मान देने की याद दिलाता है जो इस स्वतंत्र भारत के पीछे थे। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह लोगों के दिलों में देश के प्रति प्रेम को जीवित रखने में मदद करता है।

'एक व्यक्ति एक विचार के लिए मर सकता है, लेकिन वह विचार, उसकी मृत्यु के बाद, एक हजार जन्मों में अवतरित होगा
- नेताजी सुभाष चंद्र बोस'

इस दिन को मनाने के लिए दिल्ली के लाल किले में एक समारोह आयोजित किया जाता है जिसमें प्रधानमंत्री और राष्ट्र के राष्ट्रपति पूरे देश को संबोधित करते हैं और तिरंगा झंडा फहराते हैं। ध्वजारोहण के बाद इस अवसर के सम्मान में 21 गोलियों की सलामी दी जाती हैं। यह मुख्य आयोजन की भीख है जिसके बाद हमारे देश की एकता और ताकत में विविधता दिखाने के लिए बहुत सारे कार्य और सांस्कृतिक गतिविधियां की जाती हैं। सभी भारतीय सेनाओं की एक परेड होती है।

इस 75वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव अलग रहा क्योंकि हम जानते हैं कि पूरी दुनिया एक महामारी संकट का सामना कर रही है। केंद्र की ओर से सभी राज्यों को बड़े समारोहों से बचने और स्वतंत्रता दिवस मनाते समय मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग रखने के आदेश थे। इस समारोह में कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में उनकी नेक सेवा की मान्यता के रूप में समारोह में डॉक्टरों, नर्सों, स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यकर्ताओं जैसे योद्धाओं को आमंत्रित किया गया।

उन सभी लोगों को भी बुलाया गया जो कोविड-19 से उबर चुके हैं। इस साल समारोह की योजना कम लोग, सामाजिक दूरी, मास्क पहनना और इन चीजों को बनाए रखने के लिए तकनीक का उपयोग किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के लोगों से इस स्वतंत्रता दिवस पर महामारी से लड़ने और भारत को इससे मुक्त करने का संकल्प लेने का आह्वान किया है। और यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रत्येक नागरिक आत्मनिर्भर भारत के लिए काम करे। एक जश्न मनाने लायक दिन जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने अपना खून बहाया है और बहुत संघर्ष किया है। लेकिन क्या हम वास्तव में अपने स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और कड़ी मेहनत को सही ठहरा रहे हैं? हमें इस पर पुनर्विचार करना चाहिए और देश के लोगों की मदद करके उनकी वास्तविक स्वतंत्रता की दिशा में काम करना चाहिए और उन्हें आत्मनिर्भर और सक्षम बनाना चाहिए ताकि वे खुद को ही नहीं बल्कि देश का भी समर्थन कर सकें। इस स्वतंत्रता दिवस पर हमें उस भारत का सपना देखना चाहिए जो मजबूत और शक्तिशाली हो और एकता के साथ किसी भी समस्या का सामना करने की क्षमता रखता हो।

भारत में देशभक्ति एक भावना है जो अंदर से आती है। हमारी नई पीढ़ी को हमारे नेता, स्वतंत्रता सेनानियों और सैनिकों द्वारा दिए गए देशभक्ति के महत्व को जानना आवश्यक है। 15 अगस्त को हर साल उस दिन के रूप में मनाया जाता है जब भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। जब से देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले पर भारतीय ध्वज फहराया, तब से भारत अपने "भाग्य के साथ प्रयास" को जारी रखने की दिशा में काम कर रहा है।

हालाँकि, एक मुद्दा जो अक्सर लोगों को भ्रमित करता है वह है भारत की स्वतंत्रता का वर्ष। तो क्या देश इस साल अपनी 74वीं या 75वीं वर्षगांठ मना रहा है? केंद्र सरकार द्वारा शुरू किए गए आजादी का अमृत महोत्सव में कहा गया है कि इस साल भारत को आजादी मिले 75 साल हो गए हैं।

खैर, हम यहां जवाब के साथ हैं। यदि आप 1947 को आधार वर्ष मानते हैं और गणना करते हैं, तो हम स्वतंत्रता के 74 वर्ष मना रहे हैं। हालाँकि, अगर हम 15 अगस्त1947 को स्वतंत्रता का पहला दिन मानते हैं, तो हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष मना रहे हैं।

स्वतंत्रता के लिए भारत की अथक यात्रा ने दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया है। भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस पर हममें से प्रत्येक अगले 25 वर्षों के लिए देश की मदद करने के लिए ये वादे करने चाहिए:

- विज्ञान का सम्मान।
- वैज्ञानिक स्वभाव को विकसित करें और अपनाएं।
- स्वभाव से समस्याओं से निपटें।
- पहले सिद्धांतों पर लौटें।

हमें बेहतर भारत और मानवता के बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए सभी स्तरों पर सहयोग की आवश्यकता है। राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखने का कार्य विभाजन के बाद और भी महत्वपूर्ण हो गया। विदेशी पर्यवेक्षकों को भारत की स्वतंत्र और एकजुट रहने की क्षमता के बारे में संदेह था, विशेष रूप से इसकी विविधता, राजनितिक प्रशासनिक सामंजस्य की आंतरिक कमी देखते हुए। लेकिन यह केवल संप्रभु बने रहने की चुनौती नहीं थी। स्वतंत्रता आंदोलन की दृष्टि केवल विदेशी शासकों के एक समूह को विस्थापित करने और उन्हें घरेलू अभिजात वर्ग के एक समूह के साथ बदलने तक सीमित नहीं थी। यह आंदोलन राष्ट्रवादी नहीं था, बल्कि चरित्र में लोकतांत्रिक था। संप्रभुता लोगों के साथ रहने के लिए थी। जो लोग शासन करते थे वे लोगों की सहमति से ऐसा करते थे। और यही कारण है कि प्रतिनिधि लोकतंत्र का पोषण, गहरी असमानता वाले समाज में लोकतांत्रिक संस्थाओं का एक समूह बनाना, और यह सुनिश्चित करना कि राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता नागरिकों के लिए स्वतंत्रता में अनुवादित भारतीय परियोजना की आधारशिला थी। तब यह दूसरी चुनौती थी। भारत के लिए क्षेत्रीय अखंडता पवित्र थी। यह सभी राष्ट्र-राज्यों के लिए सच है लेकिन भारत के मामले में, अतीत और विभाजन के घावों ने और भी अधिक दृढ़ संकल्प को जन्म दिया। सभ्यता, इतिहास, भूगोल, कानून और संस्कृति के बंधनों के माध्यम से जो क्षेत्र भारत का था उसे खंडित नहीं होने दिया जाएगा।

75 वर्षों बाद यह स्पष्ट है कि भारत के पास उपमहाद्वीप के नक्शे को फिर से बनाने के किसी भी प्रयास का विरोध करने की मंशा और क्षमता का ट्रैक रिकॉर्ड है। लेकिन जैसे - जैसे भू - राजनीति बदलती है उसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपनी एकता और संप्रभुता के लिए चुनौतियों के लिए तैयार रहना चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस वर्ष 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से तिरंगा फहराने के बाद राष्ट्र को संबोधित किया। इस साल, हाल ही में संपन्न टोक्यो ओलंपिक की उपलब्धियों को चिह्नित करने के लिए, पदक जीतने वाले सभी ओलंपियनों को समारोह में विशेष निमंत्रण मिला। समारोह 'नेशन फर्स्ट, नेशन ऑलवेज' थीम पर केंद्रित रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस स्वतंत्रता दिवस पर भारत की आजादी के 75वें साल के मौके पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' की शुरुआत की।

स्वतंत्रता के बाद से, भारत की नियति शेष विश्व के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। भारत ने दुनिया को उपनिवेश से मुक्त करने, एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता आंदोलनों को राजनयिक और सुरक्षा सहायता प्रदान करने और कोरिया और कांगो को सैन्य मिशन भेजने में एक सक्रिय भूमिका निभाई है। इसने अफ्रीकी और एशियाई देशों के साथ संबंध सुधारने की पहल में भी अग्रणी भूमिका निभाई है। उन्होंने आगे कहा, 'आज भारत वो काम कर रहा है जिसकी कुछ साल पहले तक कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इस यात्रा में इतने लोगों के योगदान से 75 वर्षों में देश धीरे-धीरे यहाँ पहुंचा है। पीएम ने कहा,' देश में शायद ही कोई ऐसी जगह या कोना होगा, जहां देश के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाला कोई बेटा या बेटी न हो। जब ये बलिदान और उनकी कहानियां सामने आएंगी, तो ये बड़ी प्रेरणा के स्रोत होंगे।'

"भारतीय एकता का मुख्य आधार इसकी संस्कृति ही है, इसका उत्साह कभी भी नहीं टूटा और यही इसकी सबसे बड़ी खासियत है। भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण है, क्योंकि भारतीय संस्कृति की धारा निरंतर बहती रहती है, और हमेशा बहती रहेगी।"

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिलासा

जब आँखों में उदासी हो
दिल में तन्हाई हो
मन में बैचेनी हो
और होठों पे रुसवाई हो
तब मै आता हूँ ,
और हँसा जाता हूँ।
मेरे आने से लोग,
हँसते हैं, मुस्कुराते हैं,
मीठे-मिठे, अच्छे अच्छे
बोल गुनगुनाते हैं।
कुछ मुझे कोसते हैं,
कुछ खरी खोटी सुनाते हैं,
कुछ गाली भी देते हैं,
तो कुछ मुझे रुलाते हैं,
तब मै चला जाता हूँ।

पर मैं उन्हें नहीं कोसता,
मैं स्वंय को कोसता जाता हूँ ,
क्यों उसे मैं हँसा नहीं पाया
मैं यही सोचता जाता हूँ।
आखिर मै फिर जाता हूँ
उसे हँसाने के लिए
अपने होठों से निकले,
दो चार- बोल सुनाने के लिए।
क्योंकि दूसरों को हँसाना,
बस यही मेरा काम है।
हँस दे अगर कोई मेरी बातों पर,
तो यही मेरा ईनाम है।
तब शायद वे हँस देते हैं,
मेरी किसी भी बातों पे।
ध्यान न जाता किसी का भी

मेरी दिल के घातों पे
इस दुनियां चाहे मुझको
कोई काम न आता हो
चला जाऊँ मै कहीं भी
पर गमों से मेरा न नाता हो।
तब शायद मेरे जीवन का
कार्य सफल हो जाता है,
हँस देते हैं हँसने वाले
पर दिल मेरा रो जाता है।
तब मै वहाँ से हाथ जोड़कर
आने कि विदाई लेता हूँ
हँसते रहना सदा ही तुम
बस, यही दिलासा देता हूँ .....

- **श्री प्रदीप कुमार**
शाखा प्रबंधक
चेम्बूर शाखा

राजभाषा नियम 1976

नियम 5 : हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बचपन

मास्टरजी की डाँट, दोस्ती की गाँठ
आख़री बेंच में बैठना
कक्षा के बीच खसुर-पुसुर करना
आज फिर पाठशाला में जाने को जी चाहता है

तपती धूप में गिल्ली डंडा खेलना
पड़ोसी के पेड़ से आम चुराना
जैसे इमली की खटास
रसगुल्ले की मिठास
आज फिर बच्चा बनने को जी चाहता है

आचार की बोतल को छपाक से खत्म करना
मंदिर से भोग के प्रसाद को छुपके से चुराना
कभी-कबार बाऊजी के जेब से चवन्नी उठाना
फिर माँ के हाथों पिटाई होना
आज फिर पिटने को जी चाहता है

छत पर पतंग उड़ाना
नदी में छलांग लगाना, मछली पकड़ना
मिर्च-मसाले वाले खट्टी-मीठी आम खाना
बारिश में काग़ज़ के नाव छोड़ना
इंद्रधनुष का इंतज़ार करना
मासूमियत से भरे थे वो दिन
आज फिर बेफ़िकरे होने को जी चाहता है

खड़ें हैं उम्र की दहलीज़ पर हम
छूट गया बचपन, बीत गया यौवन
पर छू जाते हैं आज भी तन-मन को
यारों के साथ बिताए हुए
वो यादगार रातें और वो प्यारे दिन

आज फिर से चलेंगे पाठशाला

खतम हो गई लम्बी छुट्टी
फिरसे सुनाई देगी हमें स्कूल की वो घंटी
साइकल, रिक्शा या बस की मज़ेदार सवारी
दोस्तों के साथ होंगी फिरसे अय्यारी

नए जूते नया यूनिफ़ोरम, नई किताबें,
लेकर चलेंगे पाठशाला फिरसे
वाच्मन काका के साथ होंगी बातें,
दोस्तों के साथ होंगी गुफ़्तगू फिरसे

अब नहीं होंगी ऑनलाइन पड़ाई, सब कुछ होगा ऑफ़्लाइन फिरसे
चाहे संदेह हो या फिर कोई शिकायत, होगा सब कुछ रू-बरू फिरसे

सीखेंगे रोज़ कुछ नया, करेंगे फिरसे पड़ाई
और फिरसे करेंगे परीक्षा की तैयारी
पर होंगे कुछ ऐसे भी कलाकार,
साल भर करते रहते है लद्धड़पन
जब आती है इम्तिहान की घड़ी
करते है उम्मीद कि हो जाए कुछ चमत्कार

फ़िर जब आती है घड़ी नतीजे का,
तो हो जाता है उनको फिरसे टेन्शन
करने लगते है पूजा-पाठ और शायद
थोड़ा सा अनशन
ईश्वर के दरबार में हाज़िर होंगे फिरसे
बेचैनी से उनके दरवाज़े को खटखटाएँगे फिरसे
अपनी दुविधा उनके सामने परोसेंगे फिरसे
और फिरसे कहेंगे
हे प्रभु, एक बार हमें बचालों ना फिरसे

फिर भी लगता है सबको स्कूल प्यारा,
अध्यापक भी है सारे पसंदीदा हमारा
बच्चों की क़िस्मत को इन सब ने है सवारा
उभर आते हैं बड़े-बड़े कलाकार यहीं से
और बन जाते है चमकता हुआ सितारा भी यहीं से

इसलिए
आज फिर से चलेंगे पाठशाला
आज फिर से चलेंगे पाठशाला

प्रिया सुधीर
वरिष्ठ प्रबंधक (आशुलिपी)

अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने में लग जाती हैं.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गुड़ पापडी

साहित्य : गेहूँ का आटा एक बाउल, घी आधा बाउल, गुड़ आधा बाउल कद्दूकस, एक चम्मच इलायची पावडर, आधा चम्मच जायफल पावडर, दो चम्मच काला किशमिश, एक चम्मच टूटिफ्रुटि (ऐच्छिक), एक चम्मच बादाम काप, एक चम्मच खसखस भुना हुआ.

कृती : प्रथम पेन में घी गरम कर लेना, उसमे धीमे आँच पर आटा गुलाबी होने तक भून लेना. घी आटे से अलग हुआ के गैस बंद करना और ४-५ मिनिट तक चम्मच से हिलाते रहना की गांठ ना बने. उसमे गूड़, खसखस, टुटिफ्रुटि, इलायची, जायफल पावडर मिक्स करना और मिश्रण अच्छी तरह मिक्स करना. एक प्लेट को घी लगाकर, यह मिश्रण उसी प्लेट में एक इंच के स्तर में समान फैलाना. उसके उपर किशमिश बादाम दबाके लगाना और दो मिनिट के बाद छुरी से वडी कट करके आधा घंटा सेट कर लेना.

सुश्री उज्ज्वल खवले
सहायक प्रबंधक
परिचालन विभाग
केन्द्रीय कार्यालय

शाब्बास.....

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे सेन्ट्रलाइट परिवार के एक सदस्य श्री अनिल श्रोत्रिय एवं उनकी धर्मपत्नि डॉ. विजया श्रोत्रिय की सुपुत्री सुश्री अंजलि श्रोत्रिय ने यूपीएससी परीक्षा में ४४वां स्थान प्राप्त कर हम सभी को गौरान्वित किया है. श्री अनिल मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में शाखा खजराना में कार्यरत हैं. सुश्री अंजलि की इस महान उपलब्धि पर उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं और उनके उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करते हैं.

शाब्बास..... हमें आप पर गर्व है.....

भोपाल अंचल प्रमुख श्री तरसेम सिंह जीरा की बेटी सुश्री नवकिरन कौर ने यूपीएसई की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं ५८२ स्थान प्राप्त हुआ. हम सुश्री नवकिरन कौर की इस महान उपलब्धि के लिए उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

शाखा जूनागढ़ शाखा में पदस्थ अधीनस्थ स्टाफ सदस्य श्री नरेन्द्र भाई नानावदा ने लॉकर रूम से प्राप्त स्वर्ण आभूषणों के दो पैकेट अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए संबंधित ग्राहक को वापस कर दिए. उनकी यह ईमानदारी निश्चित रूप से प्रशसनीय है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बैंकिंग का नया अवतार : मोबाइल बैंकिंग

- श्वेता सिन्हा
संकाय प्रमुख
सीएलडी, पटना

समय के साथ बैंकिंग की कार्यप्रणाली में बड़ा परिवर्तन आया है. मोटे-मोटे बही-खातों से शुरू हुआ बैंकिंग बाद के दिनों में कंप्यूटर, उसके की-बोर्ड और माउस तक पहुंचा और अब मोबाइल फ़ोन के जरिए ग्राहकों की जेब तक पहुंच गया है. पहले छोटी खरीदारी से लेकर बड़ी खरीदारी या फिर लेनदेन करने के लिए कैश की जरूरत पड़ती थी. इस कैश को प्राप्त करने के लिए पहले बैंक की लाइन में लगना पड़ता था और फिर सामान खरीदने के लिए दूकान तक जाना पड़ता था. इन सबके बीच कैश की सुरक्षा की चिन्ता भी लोगों को लगी रहती थी. परंतु जबसे इंटरनेट बैंकिंग और फिर मोबाइल बैंकिंग की तकनीक का इजाद हुआ है तबसे सभी झंझटों से एक ही झटके में लोगों को मुक्ति मिल गई है. अब कोई भी सामान खरीदने से लेकर बड़े से बड़े पेमेंट करने के लिए लोगों को बैंक तक दौड़ लगाने की जरूरत नहीं रह गई है. बैंक अब लोगों की मुट्ठी में समा चुका है. लोगों को अब चौबीसों घंटे और सातों दिन घर बैठे बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध है. सरल शब्दों में कहें तो आप अब एक रुपये से लेकर एक लाख रुपये तक की खरीदारी या फिर पेमेंट या लेनदेन अपने मोबाइल के माध्यम से एक ही क्लिक में कर सकते हैं, बशर्ते आप मोबाइल बैंकिंग के ग्राहक हों.

भारत में मोबाइल बैंकिंग का चलन तेजी से बढ़ा है. नोटबंदी के दौर में कैश की किल्लत बढ़ने से लोगों ने मोबाइल बैंकिंग या फिर यूँ कहें कि डिजिटल पेमेंट को एक बेहतर विकल्प के तौर पर अपनाया है. फिर भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी के 'डिजिटल इंडिया' अभियान से प्रभावित होकर भी लोग मोबाइल बैंकिंग के प्रति तेजी से आकर्षित हो रहे हैं और देश 'नगद रहित अर्थव्यवस्था' (Cashless Economy) की ओर चल पड़ा है. सरकार के अभियान से प्रभावित होते हुए बैंक भी अब बैंकिंग के डिजिटल तकनीक को सुगम और सुरक्षित बनाने की दिशा में जोर-शोर से जुटे हैं.

कहना गलत नहीं होगा कि भारत में अब मोबाइल बैंकिंग रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है. इसकी वजहें भी हैं. बैंकिंग की इस तकनीक से न केवल कैशलेस लेनदेन की सुविधा मिलती है बल्कि इससे कई अन्य सुविधाओं का भी लाभ उठाया जा सकता है. साथ ही मोबाइल बैंकिंग को इंटरनेट बैंकिंग और एटीएम से ज्यादा सुरक्षित माना गया है. परंतु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत में मोबाइल बैंकिंग करने वालों की संख्या अभी बहुत कम है. इसकी सबसे बड़ी वजह देश की एक बड़ी आबादी को इस तकनीक के बारे में पर्याप्त जानकारी का न होना है. इसलिए आपकी जानकारी के लिए यहां हम आपको मोबाइल बैंकिंग क्या है, इसके लिए कौन-कौन से सॉफ्टवेयर या एप्प उपलब्ध हैं, इसके फायदे और नुकसान क्या हैं और आपको इसका उपयोग करते समय किन-किन सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए, के बारे में विस्तार से बता रहे हैं.

मोबाइल बैंकिंग क्या है? (What is mobile banking) –

मोबाइल बैंकिंग आपके मोबाइल फ़ोन के माध्यम से किया जानेवाला पैसों का लेनदेन है. बैंकिंग के इस प्लेटफार्म पर हार्ड कैश कोई मायने नहीं रखता है. इसका संबंध सिर्फ आपके बैंक खाते से और जिनके साथ आप लेनदेन कर रहे हैं, उनके बैंक खाते के साथ होता है. इस माध्यम से लेनदेन करने वालों को न तो बैंक की लाइन में खड़ा होना होता है और न ही जेब में भारी-भरकम कैश लेकर चलने की आवश्यकता होती है. मोबाइल बैंकिंग करने के लिए आपके पास सिर्फ एक स्मार्टफ़ोन होना चाहिए और उसमें इंटरनेट की सुविधा हो. हालांकि ऐसे भी मोबाइल बैंकिंग के सॉफ्टवेयर हैं जो साधारण मोबाइल फ़ोन में चलते हैं और उसके लिए इंटरनेट कनेक्शन भी अनिवार्य नहीं हैं. मोबाइल बैंकिंग के लिए आपको अपने बैंक से एक यूजर आईडी मिलता है और एक मोबाइल पिन (MPIN). कई बैंकों ने तो मोबाइल फ़ोन बैंकिंग को और भी अधिक सुरक्षित बनाने के लिए आपके उँगलियों के निशान को ही पासकोड बना दिया है. इससे धोखाधड़ी की संभावना न के बराबर रह जाती है.

मोबाइल बैंकिंग के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयर और एप्पस

वर्तमान में भारत में डिजिटल क्रांति के दौर में मोबाइल बैंकिंग के

सॉफ्टवेयर और कई एप्प उपलब्ध हैं. ये सभी एप्प गूगल प्ले स्टोर या फिर आपके बैंक के वेबसाइट से डाउनलोड किए जा सकते हैं.

- यूएसएसडी - यह मोबाइल बैंकिंग का सबसे सुगम और सस्ता तरीका है. इसके लिए आपके पास सिर्फ एक मोबाइल फ़ोन होना चाहिए जिसमें सिम लगा होना चाहिए. इसके लिए स्मार्टफ़ोन अनिवार्य नहीं है. साथ ही इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए . फोन में इंटरनेट का होना भी अनिवार्य नहीं है. मोबाइल बैंकिंग के इस प्लेटफार्म के जरिए आप किसी भी बैंक खाते में पैसे भेज सकते हैं, अपने खाते का बैलेंस जान सकते हैं और पीछे किए गए चार-पांच लेनदेन का ब्यौरा (मिनी स्टेटमेंट) हासिल कर सकते हैं. यूएसएसडी (USSD) के बारे में विशेष जानकारी और इस्तेमाल के लिए देखें कैशलेस पेमेंट करने के तरीके.

- यूपीआई - मोबाइल बैंकिंग के इस प्रणाली का विकास भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) ने किया है. यह एक मोबाइल एप्प है जिसके द्वारा ऑनलाइन भुगतान किए जाने की सुविधा मिलती है. इस प्रणाली का उपयोग करने के लिए आपके पास इंटरनेट सुविधा से युक्त एक स्मार्टफ़ोन का होना जरूरी है. वर्तमान में लगभग 21 बैंक इस प्रणाली के द्वारा अपने ग्राहकों को मोबाइल बैंकिंग की सुविधा दे रहे हैं. आप अपने बैंक के वेबसाइट से इस एप्प को डाउनलोड कर सुविधा का लाभ उठा सकते हैं. यूपीआई (Unified Payments Interface) के बारे में विशेष जानकारी और इसका उपयोग कैसे करें के लिए देखें यूपीआई के जरिए डिजिटल ट्रांजेक्शन कैसे करें?

- मोबाइल वॉलेट - मोबाइल से पेमेंट करने का यह सबसे नया तकनीक है. वॉलेट से आप समझ ही गए होंगे कि यह एक बटुआ है जिसमें पैसा रखा हुआ रहता है और आप जब चाहें इसका इस्तेमाल कर सकते हैं. वर्तमान में डिजिटल वॉलेट के कई एप्प उपलब्ध हैं. बहुचर्चित paytm एक मोबाइल वॉलेट ही है और इसके अलावा कई बैंकों ने भी मोबाइल वॉलेट को बाज़ार में उतारा है. इसमें SBI का Buddy, ICICI का Pockets, Citi Bank का MasterPass आदि जैसे कई प्रमुख मोबाइल वॉलेट प्रचलन में हैं. डिजिटल वॉलेट की खासियत यह है कि यह आपने बैंक खाते से नहीं जुड़ा होता है. इसमें पहले पैसे डालने होते हैं यानि इसे रिचार्ज कराना होता है. जितने पैसे आप इसमें डालेंगे उतने ही आप खर्च कर सकते हैं. छोटे-छोटे खर्चे और पेमेंट के लिए मोबाइल वॉलेट सबसे उपयुक्त डिजिटल प्लेटफार्म है. पेटीएम का उपयोग कैसे करें?

मोबाइल बैंकिंग को बनाएं सुरक्षित बैंकिंग –

डिजिटल तकनीक के विकास ने हमारे रोजमर्रा के जीवन को जितना सुविधाजनक बनाया है उतना ही जोखिम भरा भी. डिजिटल वित्तीय लेनदेन के लिए इजाद किए गए तकनीक इंटरनेट बैंकिंग या फिर मोबाइल बैंकिंग हमें सुविधा तो देता है परंतु इसमें हुई थोड़ी सी चूक से हमें चूना लगने में भी देरी नहीं लगती. डिजिटल तकनीक में सेंध लगाना आज कोई बड़ी बात नहीं है. वर्तमान में मोबाइल बैंकिंग कितना असुरक्षित है इसका अंदाजा सॉफ्टवेयर सिक्यूरिटी कंपनी ट्रेंड माइक्रो के एक सर्वे से स्पष्ट हो जाता है. इस कंपनी के सर्वे में कहा गया है कि Malware नाम का वायरस जो मोबाइल बैंकिंग को प्रभावित करता है, उससे संक्रमित देशों में भारत का स्थान तीसरा है. इससे हम समझ सकते हैं कि हमारे यहां होने वाला मोबाइल बैंकिंग किस हद तक असुरक्षित है. फिर भी असुरक्षा के बावजूद अगर हम थोड़ी सी सावधानी बरतें तो हमारा मोबाइल बैंकिंग खतरे से बचा रह सकता है.

मोबाइल बैंकिंग में क्या-क्या सावधानियां बरतें

किसी भी सूरत में अपना यूज़र आईडी, बैंक खाते की जानकारी और पासवर्ड या मोबाइल पिन से संबंधित जानकारी अपने फ़ोन के डिवाइस में न रखें. किसी गलत हाथों में मोबाइल जाने से आपको नुकसान हो सकता है.

- मोबाइल बैंकिंग से संबंधित एप्प या तो अपने बैंक के वेबसाइट से या फिर गूगल प्ले स्टोर से ही डाउनलोड करें. किसी अन्य वेबसाइट से डाउनलोड करने पर आप साइबर ठगी के शिकार हो सकते हैं.

- अगर कहीं आपके मोबाइल को नेटवर्क न मिल रहा हो तो लालच में फ्री वाई-फाई या हॉट-स्पॉट से मोबाइल बैंकिंग का उपयोग न करें. अगर ऐसा करते हैं तो आपके डाटा का चोरी होने का अंदेशा बना रहता है.

- अपने बैंक अकाउंट या मोबाइल बैंकिंग से संबंधित गुप्त डाटा को टेक्स्ट मेसेज के जरिए भेजने की भी कभी गलती न करें.

- साइबर चोर इतने शातिर होते हैं कि वो फ़ोन पर बात करने के दौरान भी आपके फ़ोन से डाटा ट्रान्सफर कर सकते हैं. इसलिए अनजान कॉल आने पर उनसे बात करने में सावधानी बरतें.

- अंत में सबसे जरूरी बात. अगर आप अपने मोबाइल फ़ोन का उपयोग मोबाइल बैंकिंग के लिए करते हैं तो फ़ोन को लॉक करने के साथ एप्प को भी पासवर्ड से लॉक रखना न भूलें.

मोबाइल बैंकिंग के फायदे

मोबाइल बैंकिंग की सुविधा इस समय कई लोगों द्वारा इस्तेमाल की जा रही है. इसके लाभ निम्न लिखित है

- मोबाइल बैंकिंग इन्टरनेट बैंकिंग से अधिक सुविधाजनक है. जहाँ ऑनलाइन बैंकिंग के लिए कंप्यूटर और इन्टरनेट की आवश्यकता है वहीँ मोबाइल बैंकिंग बहुत आसानी से एक छोटे से फ़ोन के ज़रिये भी अंजाम पा सकती है. साथ ही नेट बैंकिंग में सर्वर की दिक्क़त हो सकती है, लेकिन मोबाइल बैंकिंग में ऐसी किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता.

- मोबाइल बैंकिंग की सहायता से कई तरह के बिल घर बैठे ही भरे जा सकते हैं. इसकी सहायता से लम्बी कतारों में खड़े होने से बचा जा सकता है.

- मोबाइल बैंकिंग अन्य तरह की बैंकिंग से अधिक सस्ती होती है. इसका शुल्क टेली बैंकिंग से बहुत कम होता है. जिसका कारण ये है कि ग्राहक किसी की सहयता के बग़ैर अपनी बैंकिंग अपने मोबाइल बैंकिंग से कर लेता है. कई बैंक इस सेवा को अपने ग्राहकों के लिए बहुत ही कम शुल्क में ये सेवा देते है.

- किसी भी समय की जाने वाली बैंकिंग अर्थात मोबाइल बैंकिंग की सबसे बड़ी सुविधा ये है कि इसकी सहायता से किसी भी समय कहीं से भी बैंकिंग की जा सकती है. बैंक बंद हो जाने के बाद भी ग्राहक अपने मोबाइल बैंकिंग की सहायता से पैसे का ट्रांजक्शन कर सकता है.

- फ्री बैंकिंग सर्विस मतलब बैंक द्वारा दी गयी मोबाइल बैंकिंग की सुविधा के लिए बैंक कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लेता, और न ही अपने अकाउंट जाँच करने की कोई सीमा तय है. ग्राहक जितनी बार चाहे अपने बैंक अकाउंट मोबाइल में खोल सकता है.

- कई बैंकिंग कंपनी अपने इस सेवा में ग्राहकों को क्रेडिट/ डेबिट अलर्ट, अकाउंट बैलेंस की जांच, लेनदेन करना, फण्ड ट्रान्सफर की सुविधा, न्यूनतम बैलेंस अलर्ट आदि की सुविधा भी देती है.

- ग्राहक और ग्राहक लाभार्थी यदि एक ही बैंक के ग्राहक हो तो पैसे का ट्रांजक्शन बहुत ही जल्द बड़ी आसानी से हो जाता है.

- कई बैंकों ने इसके लिए अपने अलग एप्लीकेशन तैयार किया है. जिसके अंतर्गत ग्राहक बैंक के मुख्य सर्वर से संयुक्त रह सकता है, और उसके बैंक अकाउंट की कोई भी जानकारी मोबाइल फ़ोन या सिम कार्ड में सेव नहीं होती है. ये एप्लीकेशन इनक्रिप्शन तकनीक से बना होता है, जिसमे सुरक्षा सीमा बहुत अधिक बढ़ जाती है

मोबाइल बैंकिंग से हानि

मोबाइल बैंकिंग से जहाँ एक तरफ बहुती सी सुविधाएँ हैं वहीँ दूसरी तरफ कुछ हानियाँ भी हैं. अत: मोबाइल बैंकिंग इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातों का ध्यान में रखना बहुत ही आवश्यक है.

- हालाँकि मोबाइल बैंकिंग नेट बैंकिंग से अधिक सुरक्षित है क्योंकि फ़ोन में ट्रोजन और अन्य वायरस कंप्यूटर की तुलना में बहुत कम होते है. लेकिन फिर भी मोबाइल बैंकिंग में धोखाधडी होने का डर रहता है. मसलन ग्राहक के पास कई ऐसे फेक एसएमएस आते हैं जिसमे किसी बहाने से उनसे उनका बैंक अकाउंट का ब्यौरा माँगा जा सकता है. यदि ग्राहक भूल से भी अपनी जानकारियां दे देता है तो उनके अकाउंट से पैसे चोरी होने की सम्भावना बढ़ जाती है.

- ऑनलाइन बैंकिंग मूलत: 'एन्क्रिप्शन' तकनीक से किया जाता है फलस्वरुप कोई हैकर किसी ग्राहक के विवरणों तक नहीं पहुच सकता, परन्तु एक बार मोबाइल चोरी हो जाने पर ग्राहक का सभी बैंकिंग विवरण किसी और के हाथ लग सकता है. मोबाइल चुराने वाला किसी तरह से पिन डालने में सफ़ल हो गया तो ग्राहक के अकाउंट के सारे पैसे चोरी हो सकते हैं.

- मोबाइल बैंकिंग की सुविधा सभी फ़ोन में मौजूद नहीं होती. कई बैंकों के इसके लिए अपना अलग सॉफ्टवेयर बना हुआ होता है. ये सॉफ्टवेयर सभी फ़ोन में इस्तेमाल नहीं हो पाते. इसके इस्तेमाल के लिए ग्राहक को आई फ़ोन, ब्लैकबेरी आदि बड़े . फोन लेने पड़ते हैं. ये फ़ोन बहुत महंगे आते हैं. यदि ग्राहक के पास स्मार्ट फ़ोन न हो तो फिर ग्राहक एक सीमा तक ही मोबाइल बैंकिंग का फायदा उठा सकता है.

- यद्यपि मोबाइल बैंकिंग के लिए कुछ ख़ास शुल्क नहीं देना पड़ता है, किन्तु इसके लिए इस्तेमाल किये जा रहे डेटा शुल्क, एसएमएस शुल्क आदि बहुत जल्द काट लिए जाते हैं. कई बैंकों में इस सुविधा के लिए अलग से शुल्क देना पड़ता है. ये शुल्क साल में एक बार अकाउंट से काटा जा सकता है.

स्पष्ट है, एक तरफ जहां मोबाइल बैंकिंग की तकनीक से बैंकिंग प्रणाली में क्रांति आई है, वहीँ इस सुविधा का उपयोग करने वाले लोगों के बैंक खातों तक आपराधियों की पहुंच भी आसान हुई है. परन्तु आपके बैंक खातों को नुकसान तभी पहुंच सकता है जब हम इसकी सुरक्षा के प्रति लापरवाह हो जाते हैं. वैसे तो सभी बैंक अपने स्तर पर मोबाइल बैंकिंग को सुरक्षित और अभेद बनाने की दिशा में कोशिश कर रहे हैं परन्तु हम भी अगर थोड़ी सी सावधानी बरतेंगे तो डिजिटल क्रांति का यह सौगात हमारे रोजमर्रा के जीवन के लिए वरदान साबित होगा.

गणतंत्र दिवस

केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई

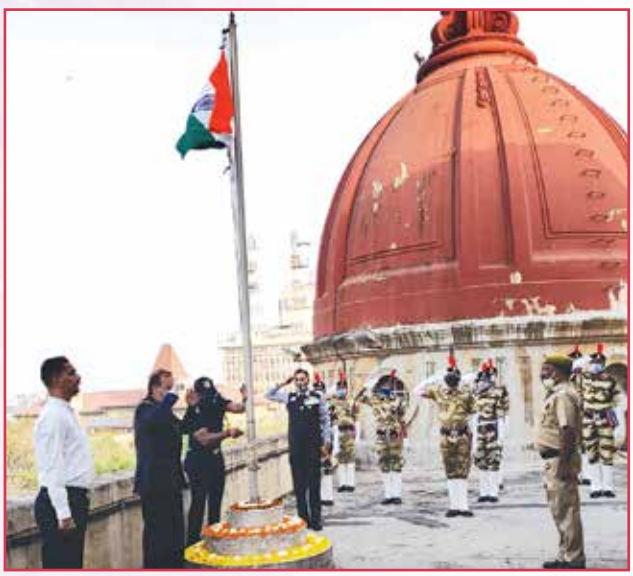

मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय

सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई

केन्द्रीय कार्यालय द्वारा गणतंत्र दिवस का आयोजन

आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद.

क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, बडौदा

क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर

दिनांक 31.03.2022 को राजभाषा विभाग केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं.

दिनांक 31.03.2022 को राजभाषा विभाग केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया

आज़ादी का अमृत महोत्सव

तो जानें

सपने देखते हैं सभी, जो सीखो उन्हें साकार करना
तो जानें....

चौराहों पे जा के मिलेंगे रास्ते कई पर,
जो उनमें से मंजिल तक पहुँचने के
ढूँढ लो सही रास्ते
तो जानें..

ग़मों में खोकर तो जीते हैं लोग पर
उन ग़मों को भुलाकर ढूंढ लो खुशियाँ
तो जानें...

अपनों के बीच रहकर तो सब खुश रह लेते हैं,
जो बेगानों में अपना ढूँढ के खुश रहना सीख लो
तो जानें...

कठिनाइयों में वक्त निकलना तो है बड़ी मुश्किल
जो उनमें वक्त को ढालना सीख लो
तो जानें...

खुद के लिए तो सब खुश हो जाते हैं,
जो दूसरों की बनों मुस्कुराहटों की वजह
तो जानें.....

अपनी आवाज़ तो खूब बन जाते है,
जो बनकर देखो दूसरों की आवाज़
तो जानें...

ज़िंदगी और मौत पे यकीन तो सब करते हैं
जो जिन्दा रह के ज़िंदगी की जीत पे यकीन करना
सीख ले
तो जानें....

ये ज़िंदगी है छोटी, हर पल खुश रहना
और खुशियाँ बांटना सीख लो
तो जानें....

स्मृति पटेल
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय पटना

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्रको 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	50%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षणी (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii)मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आईआईएम और अन्य प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों के छात्रों को सेन्ट विद्यार्थी शिक्षा ऋण

6.95% ब्याजदर पर*

- कोई संपार्श्विक या गारंटी की आवश्यकता नहीं
- कोई प्रक्रिया शुल्क नहीं
- 40 लाख तक का ऋण
- 15 वर्ष तक की अधिकतम पुनर्भुगतान अवधि

*नियम व शर्तें लागू

ऋण के लिए हमें एक मिस्ड कॉल दें, डायल करें 922 960 1111